वरुण संकल्प

मासिक समाचार पत्र

जुलाई, 2019

Scanned by CamScanner

बरन संकल्प मासिक समाचार पत्र

RNI No. : JHAHIN / 2014 / 58757 (स्थापित : 1993) जुलाई 2019, वर्ष–5, अंक–8

सम्पादक एवं प्रकाशक बरन संकल्प
सचिव, बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)
बालेश्वर प्रसाद, कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद–826001, ☎ 9431725382, 7717762093

सह–सम्पादक – **डा भुवनेश्वर मोदी,** पतरातु
☎ 9431534443

मुद्रक : बिपिन कुमार चौरसिया
प्रेस : बिपिन प्रिंटींग प्रेस, कतरास रोड, धनबाद, ☎ (0326) 2308009

स्वामित्व : बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)
प्रकाशन स्थान: कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद 826001 (झारखण्ड) E-mail : baransankalp@gmail.com

बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)

अध्यक्ष : कृष्णचंद्र अशान्त, शिव मंदिर चौक, न्यू कॉलोनी, जगजीवन नगर, धनबाद ☎ 2200243, 9934341558

उपाध्यक्ष : विमल कुमार बरनवाल, खमरिया, (भदोही) ☎ 9794862972, 9415865614

कोषाध्यक्ष : बिशेश्वर प्रसाद, **MIG/B-18,** हाउसिंग कॉलोनी, धनबाद, मो0 नं0 – 7294032449

विषय सूची

			पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	बालेश्वर प्रसाद	2–3
2.	मैं और मेरी एक सहेली	सुभद्रा गुप्ता बरनवाल	3
3.	बेचैन जिन्दगी	डॉ. भुवनेश्वर मोदी	4–8
4.	व्यथा फूल की		8
5.	होली की चिन्गारी	प्रताप नारायण बरनवाल	9–10
6.	भारत की प्रथम महिला		10
7.	शिक्षा, शिक्षक और समाज	भुवनेश्वर मोदी	11–14
8.	जड़ों की ओर	चितरंजन भारती	15–24
9.	भारत में प्रथम कब, क्या चालू हुआ		24
10.	वर–वधू		25–29
11.	स्वर्ग का सुख		31–33
12.	रुपये का इतिहास		33
13.	हेल्दी रेसिपी		36

बरन संकल्प न्यास के न्यासी परिषद के अन्य सदस्य

श्री अनन्त नारायण लाल, धनबाद – 9431377604, श्री पी0 एल0 बरनवाल, धनबाद – 9431187661, श्री विष्णु प्र0 गुप्ता, झरिया – 9431162609, श्री बी0 एल0 बरनवाल, धनबाद – 9431315440, श्री सुनील कश्यप, धनबाद – 9431125696, श्री अमरेन्द्र नारायण, धनबाद – 9835553936, डा0 महेन्द्र प्रसाद, धनबाद – 9431730154, श्री मधुकर प्रसाद, धनबाद – 9334014556, श्री सदानन्द प्र0 बरनवाल, जैना मोड़ – 9430756496, श्री जगदेव प्र0 बरनवाल, जमशेदपुर – 0657–2290174, श्री राधेश जी बरनवाल, मिर्जापुर – 9936119805, श्री ओमनन्दन प्रसाद, धनबाद – 9431191440, श्री अजित कुमार बरनवाल, आसनसोल – 9002726608, श्री महेश्वर मोदी – 9572112499, श्री साधुशरण प्रसाद, 9470570757

शुल्क "बरन संकल्प" के 01910100925352, UCO Bank, IFSC - UCBA0000191 के A/c में जमा करें।

न्यासी शुल्क 1200/–

प्रकाशित सभी लेखों एवं नकल कर भेजे गये रचनाओं का उत्तरदायित्व रचयिताओं का है। सभी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र धनबाद होगा। 'बरन–संकल्प' में प्रकाशित रचनाओं के विचार संबंधित रचनाकारों के हैं, 'बरन–संकल्प' के नहीं –सम्पादक

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

कुछ न कुछ किया करो। पैजामा फाड़कर सिया करो।।

इस मजाकिया लतीफे को सबसे पहले जिसने कहा होगा, वह अवश्य बड़ा सूझ–बूझ वाला व्यक्ति रहा होगा। आज के युग में सुर्खियों में रहने के लिए खासकर भारतीय राजनीति में ऐसे–ऐसे महानुभावों की कमी नहीं है, जो कोई न कोई मुद्दा ढूंढ़ते न रहते हों। ऐसे बेपेंदे के घड़ा कब किधर लुढ़क जायेंगे, समझना कठिन है।

सुबह का बना तिरेसठ का रिश्ता शाम ढलते ही छत्तीस में बदल जाना भारतीय राजनीति में आम बात हो गई है। फिर बयानबाजी जो शुरू होती है तो उसका सिलसिला कई दिनों तक चलता रहता है। विगत तेइस मई को लोकसभा चुनाव परिणाम की घोषणा और फिर 30 मई की सात बजे शाम में 'मोदी जी' और उनके मंत्रिमडल का शपथ ग्रहण के साथ ही राजनीति गगन में बादल का हल्का सा छींटा देखने को मिला। बादल का यह छींटा बिहार से छिटकता देखा गया। इस मंत्रिमंडल में नीतिश बाबू का खेमा सम्मिलित नहीं हुआ। कारण कम से कम तीन मंत्रियों की चाहत था जबकि 'मोदी जी' का खेमा एक से अधिक को देना नहीं चाहता था। ऐसे तो नियमानुसार 12 लोकसभा या विधान सभा के सदस्य पर एक मंत्री का चयन किया जाता है। इस दृष्टि से देखा जाय तो बिहार से जीतकर 16 सदस्य लोकसभा में गये हैं तो अधिकतम दो सदस्यों का मंत्री बनने का अवसर मिलना चाहिए था, माँग थी तीन की। ऐसे में इस हठधर्मिता में गल–फुलोवल होना स्वाभाविक था। इसी से नीतीश बाबू ने बिहार पहुँचते ही तुरन्त वक्तव्य दे दिया कि केन्द्रीय मंत्रिमंडल में जदयू का सम्मिलित होना कोई बहुत न तो मायने रखता है और नहीं उसकी बहुत भूख है। पर इसी के साथ जब उन्होंने बिहार में मंत्रिमंडल का बिस्तार किया तो उन आठ मंत्रियों में से एक भी स्थान भाजपा को नहीं मिला या भाजपा ने नहीं लिया। अर्थात तू दिल्ली में राजा तो मैं बिहार में। अब मौका मिल गया जीतन राम मांझी को। वो महागठबंधन से बिना परामर्श लिए नीतीश बाबू से जा मिले। संभव है। वो पुनः भाजपा को हटाकर राजद को मिलाकर पुरानी लकीर पर चलने के लिए नीतीश बाबू को प्रेरित करे। इफ्तार पार्टी में पुनः वफादारी दिखाकर दुम हिलाने वाली राजनीतिक चाल चलना कोई बड़ी बात नहीं है। मोदी जी को बिहार में राजनीतिक बर्चस्व बनाना था सो पाँच वर्ष के लिए बना लिए। अब वन का गीदड़ जायेगा किधर वाला तमाशा शुरू हो गया है।

इसी के साथ जून के प्रथम सप्ताह में यूपी में भी पूरब–पश्चिम से एक साथ बादल गड़गड़ाने लगे है। महागठबंधन बनाने वाले अखिलेश बाबू और मायावती का बबुआ–फूआ का रिश्ता टूट चुका है। भविष्य में 11 विधायक का खाली स्थान भरना है। मायावी मायावती बहनजी ने कहा दिया कि अखिलेश अपना यादव वोट भी नहीं समेट सके। ऐसे में उनके साथ रहकर गठबंधन धर्म निभाना असंभव हो गया है। अर्थात वे अलग से 11 विधान सभा का उप चुनाव लड़ेगी। आखिर कहें भी तो क्यों न कहें। जिस अखिलेश यादव ने अपने परिवार की महिलाओं से मायावती के पैर छुआवे उनके यादव वोट का बिदकना स्वाभाविक था। क्या इस मेल–मिलाप से मुलायम बाबू खुश थे? उनकी इच्छा के विरूद्ध बबुआ ने इतना झुकना पसंद किया था। पर जातीय स्वभिमान यू0पी0 के यादवों ने मायावती की पार्टी को वोट न देकर दिखा दिया कि कुर्सी के लिए अखिलेश भले ही झुक जाएँ, पर यादव अपने स्वाभिमान की रक्षा करना जानते हैं। और वे ऐसा करें भी क्यों नहीं। कभी–काल मायावती बहन ने अखिलेश बाबू से कहा था 'एक समय ऐसा आएगा जब तेरे खानदान के लोग मेरे पैर पर झुकेंगे' यादव मायावती के इस अहंकार को भूले नहीं थे। और यह छुपा हुआ सच सामने खुलकर सामने आ गया। अर्थात् समझने वाले समझ गये और जो न समझे वो अनाड़ी है।

Scanned by CamScanner

राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में करारी हार की झेंप मिटाने के लिए और मुस्लिम वोट बैंक के लिए तुष्टीकरण की नीति को काँग्रेस छोड़ने वाली नहीं है। भले ही रस्सी जल जाय पर ऐंठन जाने वाली नहीं है। इस काम को बाखूबी विगत 31 मई को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कर दिखाया। उस दिन उन्होंने एक धमाका स्व0 दामोदर राव सावरकर पर फोड़ा। उनके अनुसार दामोदर राव सावरकर ने सबसे पहले पराधीनता काल में भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करने की माँग अंग्रेजों से की थी। उन्हीं की देखा–देखी मुहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान की माँग की थी। अर्थात देश बंटवारा का सारा दोष हिन्दू धर्म सभा पर मढ़ा गया और मुसलमानों की पार्टी मुस्लिम लिग को इस कलंक से मुक्त रखा गया। अर्थात तब की हिन्दू धर्म सभा दोषी और काँग्रेस और मुस्लिम लीग अर्थात जिन्ना निर्दोष। इसी का दूसरा नाम है तमाशा देख तलवा सहलाना।

अब थोड़ा बंगाल की तरफ रूख कीजिए। वहां ममता दीदी ने बंगालिन महिलाओं का वोट बचाये रखने के लिए एक शगूफा छोड़ दिया है उनका कहना है कि जय श्री राम के साथ 'सीता' को छोड़ दिया हैं अर्थात भाजपा भारतीय हिन्दू महिलाओं की उपेक्षा करती है। पर वहीं ममता दीदी ने 2017 के दुर्गापूजा के विजयदशमी के दिन मूर्ति विसर्जन में कौन सा खेल खेली क्या माँ दुर्गा की उपेक्षाकर उन्होंने भारतीय हिन्दू नारी की उपेक्षा नहीं की थी?

अब सब का निचोड़ केन्द्र सरकार को देखिए। नई शिक्षा नीति के तहत हिन्दी अनिवार्यता समाप्त कर दी है। हिन्दी हमारी जननी, जन्म भूमि भारत माता की राष्ट्रभाषा है। क्या इसका स्थान कोई गैर क्षेत्रीय भाषा ले सकती है। अब तो दक्षिण भारत के द्रविड़ राज्यों में भी बच्चा – बूढ़ा हिन्दी बोलने समझने लगे है। फिर भी तिरूचि शिवा और कमल हसन की धमकियों के आगे केन्द्र सरकार झूक कई और त्रिभाषा फार्मूला को वापस ले ली। भाजपा की इस सरकार की यह कैसी नीति और कैसा खेल है। इसी से कहा जाता है कि 'कुछ न कुछ किया करो, पैजामा फाड़कर सिया करो।'

बालेश्वर प्रसाद, सम्पादक

''मैं और मेरी एक सहेली''

मैं और मेरी एक सहेली
अक्स ही जब मिलते हैं
बचपन की वो भूली बिसरी बातें साझा करते हैं
मैं और मेरी एक सहेली अक्सर ही जब मिलते हैं
मन के खालीपन के किस्से
सपनों की कुछ निष्ठुर किये
दर्द भरे जीवन के लम्हें
और अनगिणत खुशियों के पल
परत–दर–परत मन की गांठे खुलकर साझा करते है
मैं और मेरी एक सहेली अक्सर ही जब मिलते हैं
गांव की टेढ़ी पगडन्डी पर
बचपन का नन्हा मृगछौंना
सहमें–सहमें भरे कुलांचे
अन्तरमन की टीस समेटे
पीड़ा की थाली संजोये
एक अदद पुस्तक की भाँति पन्ने रोज पलटते हैं
मैं और मेरी एक सहेली अक्सर ही जब मिलते हैं
रोज नये अफसाने लेकर
खुशबू और तराने लेकर
तन्हाई और दर्द छुपाकर
यादों की बंजर धरती यूं महकाते मुस्काते हैं
मैं और मेरी एक सहेली अक्सर ही जब मिलते हैं

सुभद्रा गुप्ता बरनवाल
मोती सोप, झरिया

Scanned by CamScanner

उपन्यास

बेचैन जिन्दगी

भाग – 18

चारों बेटे–बहू और बेटी सविता तथा दामाद श्याम सुन्दर की उपेक्षा के कारण सोनमती देवी भिखारिन बन गई थी। इस बात से त्रिभुवन बाबू और सोनमती देवी की भतीजी निर्मला बिकुल अनजान थे। पत्नी की प्रताड़ना एंव साले की बेटी निर्मला के कुशल व्यवहार से ही त्रिभुवन साहू उस के घर आकर टिके थे। उर्मिला के विवाह के बाद जब वह गर्भवती हुई और यह समाचार जब निर्मला और त्रिभुवन साहू को पता चला तो उससे मिलने निर्मला स्वयं उर्मिला की ससुराल चली गई। इसीक्रम में उसकी भेंट फूआ सोनमती देवी से हो गई। जिसकी चर्चा उसने घर आकर फूफा साहू जी से की। साहू जी के दिल पर इस तरह की चोट पहुंची थी कि उन्होंने मौन रहना ही अपना हित समझा था। पर निर्मला के बार–बार निवेदन करने से उन्होंने अपने पास ले आने की स्वीकृति दे दी पर अपने आपको उन्होंने सुरक्षित कर लिया निर्मला बहुत चाहती थी कि फूआ और फूफाजी में बातचीत हो पर त्रिभुवन साहू अपनी जिद्द पर अड़े थे। जल में मेढ़क और मछली के बैर की तरह दोनों एक दूसरे से जुदा ही रहे। इसबीच निर्मला नाना–दादी भीं बन गई । इसे संयोग या दुर्योग ही कहिए कि एक दिन ग्रीष्म की संध्या में जब त्रिभुवन साहू घर की छत पर थे, निर्मला भी वहाँ जा पहुँची। सोनमती देवी घूमने की इच्छा से छत पर जब चढ़ना चाही तो फिसलकर सीढ़ी पर ही गिर गई। उसकी चीख सुनकर निर्मला नीचे उतरी और फूआ को संभालकर खाट पर लिटा दी। उधर त्रिभुवन साहू संध्या भजन–प्रार्थना गाने लगे। इतनी बातों की चर्चा मैंने भाग 17 में पाठकों के बीच की थी। इसके बाद क्या हुआ, देखते जाइए :–

सीढ़ी पर गिर जाने से सोनमती देवी बार–बार भगवान से दुनिया से ले जाने की गुहार लगा रही थी। उसके क्रन्दन को सुनकर भी साहू जी ने अनसुनाकर दिया। ऐसे में भगवान उनकी प्रार्थना को कितना सुन रहे होंगे। यह सहज अनुमान का विषय था। जब मनुष्य–मनुष्य के अपराध को क्षमा न कर दया दिखाना नहीं चाहता तो भला दूर बैठा भगवान अथवा सद्गुरू कितनी दया अपने भक्त पर दिखला सकते हैं, यह हर इंसान अनुमान लगा सकता है। फिर भी त्रिभुवन साहू गाये जा रहे थे –

'यही साध है, बस मेरे जीवन में,
जपता रहूँ तेरा नाम सदा निज मन में।
रूप रंग सुगन्धपूर्ण तेरी छवि को,
सदा बसाए रखूँ अपने नयन में।।

शीतल मन्द सुगन्ध भरा पवन जब
बह–बह आवे मेरी कुटिया पर जब–जब
तब–तब तेरी खुशबू भर दे मन में
अनुपम सुख पाऊँ तब तेरे नमन में।।

संध्या को जब तारे छाएँ गगन में,
उनके बीच चंदा चमके नीलांगन में
ऐसे में तब उसकी चाँदनी पा मैं
समझूँगा तेरा मिला स्नेह जीवन में।।

'यही साध है, बस मेरे जीवन में,
जपता रहूँ तेरा नाम सदा निज मन में।
रूप रंग सुगन्धपूर्ण तेरी छवि को,
सदा बसाए रखूँ अपने नयन में।।

श्रावण की रिमझिम बरसा से जब भी,
भींगे तन मेरा पुलकित मन हो तब भी।
हरित भरित धरती देख मन भाए,
मानो तेरी कृपा स्नेह हों पाए।

तब क्या शेष रह गया मेरे जीवन में,
जो न नमन हो लूँ तेरे चरण में।।

सरस शन्त शरद ऋतु जब–जब आवे,
तृण – तृण की नोकों पर ओस छिटकावे।
ऐसे में उन मोती राशि को पा मैं,
समझूँगा तेरी कृपा दृष्टि हो पाए।

तब क्या चाहत रह गया मेरे जीवन में
जो न समर्पित हो लूँ तेरे चरण में।।

Scanned by CamScanner

शिशिर ऋतु जब अपना कोप दिखाये,
मन में आलस बार–बार भर आए।
ऐसे में तब बन्द कमरे में छुपकर,
बार–बार मोदी तेरी महिमा गाए।
ऐसा ही मन बना रहे जीवन में,
यही कामना पूर्ण हो निशा गहन में।।

इसके बाद इष्ट प्रार्थना और नाम –जाप के बाद साहू जी नीचे उतरकर कमरे में चले गए। रात को खाना खाने के बाद जब वह सोने का उपक्रम करने लगे तो और दिन की भाँति उस रात भी निर्मला साहू जी को तेल लगाने चली गई। पर उन्होंने यह कहकर तेल नहीं लगवाया – ''बेटी तुम दिन भर काम करते–करते थक जाती हो। मुझे तेरे परिश्रम पर दया आती है। तेरी बहू को इतनी भी समझ नहीं है कि वह तुम्हे तेल लगा दें, पर तुम हो जो हम दोनों की देह मले बिना मानती नहीं हो । उस दिन उनके आग्रह को निर्मला मान गई पर कुर्सी खींचकर वहीं उनके सिरहाने के पास बैठ गयी और यह प्रसंग छेड़ दी कि कैसे–कैसे उसकी फूआ भिखारिन बनी थी।

साहूजी का मकान गिरिडीह जिले के राजधनवार के आसपास था, पर नौकरीपेशे में आने पर रामगढ़ के बिल्कुल दक्षिणी छोर पर मकान बना लिए थे। उधर उसके दोनों बेटे उनसे दूर रहकर अलग–अलग मकान बनाकर रहने लगे थे। साहूजी ने बड़ी बेटी बनिता का विवाह बड़कागाँव में और सबिता का विवाह हजारीबाग में किया था। निर्मला का पैत्रिक मकान विष्णुगढ़ के आस–पास था, पर उसका विवाह पेटरवार के बगल के गाँव में हुआ था। उसने बेटी की शादी बोकारो थर्मल के पास नारायणपुर में की थी और बहू इसकी डुमरी की थी। इसी से निर्मला को नारायणपुर जाने के लिए दो में से किसी एक रास्ते को चुनना था। एक रास्ता था पेटरवार से गोमिया होते हुए बोकारो थर्मल जाकर नारायणपुर जाने का और दूसरा रास्ता था जैनामोड़ होते हुए फूसरो जाकर छोटी गाड़ी से नारायणपुर जाने का। संयोग से उर्मिला के घर जाने के क्रम में उसने जैनामोड़ वाला रास्ता ही चुना और उसकी भेंट फूसरो के बस स्टैण्ड पर फूआ से हुई थी।

सोनमती देवी से विवाद के बाद साहू जी जब घर से निकल पड़े तो वह रामगढ़ स्टेशन चले आए थे, जहाँ तक निर्मला ने उनक पीछा किया था और मान मनौवल के बाद उन्हें पेटरवार ले आयी थी। उधर रामगढ़ के मकान में तालाबंदी कर सोनमती देवी बेटी–दामाद के पास हजारीबाग आ गयी, पर एक वर्ष भी ठीक से नहीं बिताया कि सविता के घर से उसे निकाल दिया गया। तब वह कई दिन तक हजारीबाग बस स्टैण्ड पर भीखमंगी करती रही। शायद इस उम्मीद पर कि कहीं सविता और श्यामसुन्दर का दिल पिघले और वे उसे वापस ले जाएँ। पर ऐसा नहीं हुआ। अन्ततः उसने आत्महत्या करने की ठान ली। हजारीबाग से भीख माँगती वह पैदल राँची रोड आ गई। यहाँ उसने रेल लाइन में कटजाने का प्रयास किया, पर एक सज्जन की तत्परता से उसकी जान बच गई। उस व्यक्ति ने बहुत समझा – बुझाकर मरने से रोक लिया। अब वह ट्रेन पर ही भीखमंगी करने लगी और इसी सिलसिले में वह चलकर फूसरो स्टेशन पर आ गई। यहाँ कभी वह बस स्टैण्ड पर भीख माँगती तो कभी स्टेशन पर। पर उसकी रात स्टेशन पर ही शेड के नीचे गुजरती। इसी तरह की जिन्दगी बिताते उसके लगभग दस वर्ष बीत गए। सुनकर साहूजी अवाक् रह गए। पर इसमें उनका क्या कुसुर था, उन्होंने निर्मला से पूछा। ' भला इसमें आपका क्या कुसुर रहेगा? यह सब भाग्य का खेल था फुफा। शायद इतना दिन इसके भाग्य में भीख मांगना लिखा था तभी इसकी मति पलट गई थी जो उस दिन सबिता की ममता में आकर आपसे उलझ गई। पर पता है कि इसका क्या दण्ड सविता को मिला'' निर्मला ने बताना चाहा। '' क्या हुआ?'' साहू जी का प्रश्न था।

सविता को माँ का श्राप लग गया। वह भी सुन लीजिए। जैसा कि मुझे कल ही मेरी फूफेरी ननद ने सुनायी जो हजारीबाग की है और उसी के कहने पर उर्मिला की शादी आपने की थी। इस पर रोकते हुए

Scanned by CamScanner

साहू जी ने पूछा – 'पहले यह तो बताओ कि जब हजारीबाग से चलकर तेरी फूआ रांची रोड चली गयी तो रामगढ़ पन्नालाल अथवा आजाद के पास क्यों न गई? तुम्ही ने न बतायी थी कि वे दोनों भाई हजारीबाग आकर श्यामसुन्दर के साथ मारपीट कर आपका दिया हुआ मकान का बॉड पेपर लेकर चले गए और माँ को पूछे तक नहीं तो फिर उन कमीनों के पास क्यों नहीं गई?

निर्मला – फूफा ! भाग्य की मारी फूआ उन दोनों के पास गये जरूर उन दोनों की महारानियों ने घर में घुसने नही दिया। दोनों ने यही कहा कि जिस बेटी को नगद और जेवरात दे आती हो उन्हें पहले माँग लाओ। अब इसने चाहा कि बड़कागांव बनिता के पास चली जाय। यह वहां जाने के लिए बस पर बैठ भी गई। पर पास में भाड़े के पैसे नहीं थे, इसलिए कन्डेक्टर ने इसे रांची रोड में ही उतार दिया। अब हर तरफ से ठोकर खाकर और निराश होकर अन्ततः आत्म–हत्या करने कीसोची। पर इसको भीख मांगना भोगना था सो वह ग्रह पूरा हो गया। अब समय फिरा तो मेरे पास आ गई।

साहूजी – '' तो क्या बनिता को मालूम नहीं हुआ होगा?''

निर्मला – मालूम कैसे नहीं हुआ होगा? हो सकता है कि चारों बेटे बहू बहाना बना दिये होंगे। आपने अपना मोबाइल भी तो रखना बंद कर दिया है। फिर कैसे कोई जाने के आप मेरे पास है और ये सब के सब स्वार्थी सोचते है कि भला हो बुढ़ापे में सेवा न करना पड़े। इसलिए एक दूसरे पर दोषारोपणकर चुप लगा दिये होंगे। फिर कुछ रूककर बोली – अब सुनिए सविता का हाल। उसके पति श्यामसुन्दर पक्का शराबी और जुआरी निकल गये। जब तक पैसा रहा सब हारकर स्वाहा कर दियेअब दिन भर कहीं पीने – खाने का कोई जुगाड़ बैठा ले और रात को पीकर आवें। फिर दोनों बेटे–बेटी और सबिता की खूब पिटाई करे। भूख के मारे दोनों बच्चे बिलबिलाये। उनकी ममता में आकर सविता दायी का काम करने लगी। अब उस पैसे को भी वह छीन कर ले जाय। न देने पर सविता की खूब पिटाई करें। इसी तरह एक वर्ष बीत गए। एक दिन वह पियक्कड़ किसी की मोटर साइकिल लेकर कहीं जा रहा था। पीये हुए तो था ही, रफ्तार में किसी गाड़ी से टकराया और वहीं दम तोड़ दिया। इस तरह सबिता का सुहाग उजड़ गया। उसे माँ का श्राप लग गया। सुनकर त्रिभुवन साहू बड़े मर्माहत हुए। आज लगभग आठ नौ वर्ष बाद उन्हें ये सारे समाचार मिले थे। इसके बाद जब निर्मला अपने कमरे में चली गई तो उनकी बेचैनी बढ़ गई। वे तर्क–वितर्क करने लगे कि उन्होंने अपने जीवन में कहा भूल की चिन्ता और चंचल चित्त के कारण उन्हें नींद नहीं आ रही थी। बाएँ–दाएँ करवट बदलते–बदलते उन्हें एक बात याद आयी। बहुत पहले उन्होंने श्री राम शर्मा आचार्य जी का एक लेख पढ़ा था जिसमें उन्होंने लिखा था कि अगर किसी की संतान माता–पिता से धन का दोहन कर उन्हें बुढ़ापे में भाग्य भरोसे छोड़ देती है और उपेक्षित कर देती है तो उस व्यक्ति को यह सोचकर संतोष कर लेना चाहिए कि कहीं पूर्व जन्म में मैंने किसी कारण वश उससे कोई ऋण तो लेकर नहीं चुका पाया था जिसे वसूल करने के लिए वह मेरी संतान के रूप में मेरे घर आकर वसूल करके मुझे भाग्य भरोसे छोड़ दिया है। ऐसे में उसे अपने भाग्य को कोसना छोड़कर भगवान पर भरोसा कर संतोष कर लेना चाहिए कि चलो अच्छा हुआ, मैंने उसका ऋण तो चुका दिया और बैल घर जन्म लेकर जो डण्डे खाकर और बोझा ढोकर उसका ऋण वसूल करता उससे तो अच्छा हुआ कि कमाई करके ही सही ऋण मुक्त तो हो गया। हमलोग तो पूर्व जन्म के कर्मो पर भी तो विश्वास करते है और पूर्व जन्म से सुख दुःख का फल इस जन्म में भी तो भोगते है। शायद यही प्रसंग मेरे साथ भी सटीक बैठ रहा है। पर धन खोने का माध्यम कोई और के होने से ममतावश हम कारण किसी और को ही मान लेते है। अज्ञानतावश शायद यही ममता मुझे सता रही है।

Scanned by CamScanner

सोने जाने से पहले निर्मला ने फूफा से पूछा भी कि यह समाचार जान कर क्या आप सविता से मिलने हजारीबाग जायेंगे। इस पर त्रिभुवन साहू ने साफ इंकार करते हुए कहा – ''बेटी ! अब मेरी ममता मर चुकी है और मैं पुनः पीछे लौटने वाला नहीं हूँ। मर्जी हो तो तुम रखो वर्ना जवाब दे दे, मैं अब भी कहीं और जगह ठौर ले लूंगा। इस पर निर्मला उनका मुंह बंद कर बोली थी – '' फूफा / आपको निकालने के पहले मैं विष खा लेना पसन्द करूंगी, पर वैसा पाप कर्म नहीं करूंगी। मैं भी मरकर भगवान के पास क्या जवाब दूंगी? मुझे इतना बड़ा पाप नहीं होगा। आप जिस रूप में है रहिये और अमर रहिए, इसी में हमारे परिवार की भलाई है। सुनकर साहू जी निहाल हो गये थे। शायद उनके भाग्य में यही होना था या संभव है कि निर्मला पूर्व जन्म में मेरी मां रही होगी जो इस जन्म में मुझे इतना भाव–आदर और ममता दे रही है। उनका गला रूँध गया और नयन छलक पड़े।

इसी तरह एक वर्ष और बीत गए। वे नियमित रूप से जहां भी सत्यसंग होता, जाते। प्रतिदिन इस्ट मृति सुबह–शाम प्रार्थना और भजन–भाजन करते। उन्होंने निर्मला से कहा भी कि तुम सपरिवार दीक्षा ले लो। पर इसका मर्म समझ में न आने के कारण वह टालती रही। साहू जी ने भी बहुत जोर नहीं दिया, यह सोचकर कि श्री श्री ठाकुर की जब प्रेरणा होगी, वह स्वयं दीक्षा लेने को तैयार हो जायेगी। एक वर्ष के उपरान्त साहू जी की आत्मा गवाह देने लगी कि शायद अब इस धरती को छोड़ने का समय आ रहा है। ऐसे में क्या किया जाय। बहुत चिंतन के बाद उन्होंने निर्मला से कहा – ''बेटी तुम विनोद को लेकर मेरे साथ कोर्ट चलो। मैं वहां एक बॉड पेपर बना देना चाहता हूँ जो समय पर तुम्हे काम आयेगा। पता नहीं मेरे मरने के बाद कहीं वे दोनों कमीने (बेटे) तुम्हे परेशान कर बैठे तब उसकी छाया प्रति उन्हें थमा देना। अगर न माने तो उन्हें कोर्ट जाने का रास्ता दिखा देना, डरना नहीं और हां उनके हाथ में पास बुक या कोई भी मेरा पेपर नहीं देना। सब कुछ मेरे बक्से में बंद मिलेगा। यथा साध्य कोशिश करना कि मेरे मरने की खबर उन्हें नहीं मिले।

इस पर निर्मला बोली – ''क्यों पागल जैसा बक रहे हैं? आपको जो करना है कीजिए, पर बार–बार मरने की बात क्यों करते हैं? पर उन्होंने नहीं माना। एक–दो दिन के उपरान्त उन दोनों माँ–बेटे को लेकर कोर्ट चले गये और भली–भांति वकील से समझ–बूझकर बॉण्ड पेपर बनाकर निर्मला के हाथ में सौंप दिया। साथ ही बैंक खाते में जमा सारी रकम का नोमिनी भी निर्मला को बना दिया ताकि भविष्य में बैंक द्वारा कोई आपत्ति न हो। केवल पेंशन पाने का अधिकार सोनमती देवी को रहने दिया।

समय गुजरते जा रहा था और तेजी से साहू जी का स्वास्थ्य भी; पर वे निर्मला से सब कुछ नहीं कहते। कभी–कभी छत पर चढ़ने में दिल का धड़कन बढ़ जाता है तो कभी रात को सोये –सोये ही। शायद उनकी इच्छा चलते – फिरते प्राण त्याग करने की रही होगी। खाट पर पड़े–पड़े मौत को बुलाने से तो अच्छा है चट आदमी गिरे और पट चलता बने। किसी से कुछ कहने की जरूरत भी न हो। जनवरी का महीना था। लगभग दस बज चुके थे। आंगन में धूप निख आयी थी। उन्होंने गरम पानी से स्नान किया और वहीं उनका शरीर कांपने लगा। उन्होंने निर्मला को हाँक लगायी। ऊँची आवाज सुनकर वह तेजी से आंगन में आयी। वह सिर्फ इतना ही बोल सके, खाट बिछा दो और मुझे दूध में गंगाजल और तुलसी जल मिलाकर पिला दो। अब मैं चलने वाला हूँ। निर्मला जल्दी–जल्दी खाट बिछाकर दूध में गंगाजल और तुलसी लाकर जैसे मुंह में उड़ेली, उनके प्राण पखेरू उड़ गए। मुंह से सिर्फ एक ही बार हे राम निकला और

''राम राम कहि राम कहि, राम–राम कहि राम।
राम – राम कहि राम कहि त्रिभुवन गए सुर धाम।''

पर छः बार तो नहीं पर एक बार उनके मुह से यह पवित्र जगतारण शब्द अवश्य निकला और शरीर एक तरफ लुढ़क गया। दिल का धड़कन बंद हो चुका था

Scanned by CamScanner

और मुंह खुला का खुला रह गया। निर्मला ने उनके शरीर को बहुत झकझोरा पर उसमें कोई हरकत नहीं हुई। उसने जोर से विनोद को आवाज दी। वह बारी में फसल को पानी दे रहा था। उसने उसे तुरंत आग जलाने का आदेश दिया। पूरे देह की सेंकाई की गई। पर प्राण तो कभी के निकल चुके थे। यह जानकर कि अब फूफा नहीं रहे वह पछाड़ खाकर खाट के नीचे सीना पीटने लगी। बूढ़ी बगल में बैठी थी। वह धीरे–धीरे शव के पास चलकर आयी और सीने पर सिर रखकर फफक पड़ी। हे! राजा चलते–चलते भी मुझे दो बात भी नहीं बोल लिये। आपकी जिद्द रह गई। फिर उसने हाथ की चुड़ी खाट की पाटी में ही पटक–पटक कर तोड़ दी। जमीन में माथ रगड़–रगड़कर मांग का सिन्दूर पोंछ डाली। उसकी यह दशा देख विनोद ने उसे खींचकर अलग कर दिया। पूरे घर में कोहराम मच गया। शर्मिला और तीनों बच्चे भी भी फूट–फूट कर रोने लगे। विनोद और निर्मला बार–बार दुहाई दे रहे थे। निर्मला के आगे सारी धरती धूम रही थी। आज लगभग बारह वर्ष के बाद उसे लग रहा था मानों उसके फूफा का नहीं बल्कि धर्म पिता का वरदहस्त उस पर उठ गया। शोर और क्रन्दन सुनकर टोले–मुहल्ले के लोग जमा हो गए। सुनकर सबों को आश्चर्य हुआ। सभी उन्हें विनोद के नाना के रुप में जानते थे। साहु जी के प्राण उड़ कर सूर्य की किरणों से निकलकर अन्तरिक्ष में समा चुके थे और शोक जताने वाले लोग एक–एक कर खिसक रहे थे। कुछ ही स्वजाति और गोतिया के लोग वहां रह गए थे। सद्गुरू ने साहु की मन्नते स्वीकार कर ली। वर्ना ऐसी सुखद मौत तो बिरले ही लोगों को नसीब होती है।

शेष अगले अंक में।

क्रमशः जारी .....

डॉ. भुवनेश्वर मोदी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़,
पतरातू, जिला – रामगढ़

व्यथा फूल की

कहा फूल ने मुझे न तोड़ो
चरणों का अभिलाषी हूं
जाति–पंथ–मजहब न पूछो
केवल भारतवासी हूं।
मुझे तोड़कर ले जाते हैं
पंडित और पुजारी नित्य
लेकिन मैं लज्जित होता हूं
देख–देखकर इनके कृत्य।
मंदिर में जयकार लगाकर
देते जनता को धोखा
यदि चढ़ावा नहीं दिये तो
दर्शन करने से रोका।
हर मजार पर मुझे चढ़ाते
नित्य नये चादर पर लोग
गिरजाघरों की शान में लेते
भेंट–चढ़ावा–छप्पन भोग।
पंडित–मुल्ला और पादरी
सब पैसे पर बिक जाते
हुआ न पर्दाफास यदि तो
ये वर्षो तक टिक जाते।
छद्म वेश में ये हैं रहते
जनता समझ न कुछ पाती
बहन–बेटियों कन्याओं की
आश्रम में इज्जत जाती।
इनके इन करतूतों से ही
मैं घबराता रहता हूं
नहीं चढ़ाना मुझे तोड़कर
रो–रोकर ये कहता हूं।

मोहन प्रसाद बरनवाल, ऊखड़ा

Scanned by CamScanner

होली की चिन्गारी

होली आगमन को सुन प्रत्येक होली खेलने वाले प्रेमी के दिल–मन को रोमांचित करता रहता है। शिशिर ऋतु के ठंडे ठिठुरन से उतरा मौसम बसंत बहार के अठखेलियाँ करना प्रारम्भ कर देता है। तब आगत सुहावन मौसम प्रत्येक जीवन प्राणियों में जोश व जागृति पैदा कर देता है।

हर साल की भाँति इस बार भी होली त्यौहार के आगमन की खुशी फिजायों में तैरने लगी। गाँव–खलिहानों में तथा संगीत प्रेमियों के अधरों से बासंती गीत होलीरस से सराबोर गुँजने लगी। ऐसे में प्रतीत होने लगा कि अब प्रकृति जन–जन के नसों में एक नवजागृति इन गीतों के माध्यम से अंगाईयाँ ले रही है।

तभी तो, राँची शहर के गौतम कॉलोनी व विकास नगर में पुरानी प्रतिद्वंद्विता का दौर भी अपना स्वरुप लेने लगा। खासकर युवा वर्ग में कुछ नयापन कर दिखाने की मंशा बलवती हो रही थी। सादगी पसंद गौतम कॉलोनी के लोग चाहते थे कि इस बार कुछ नये ढंग से होली मनाया जाये। इसके लिए वहाँ के कुछ युवा वर्ग प्रतिष्ठित व प्रबुद्ध व्यक्तियों का एक गुप्त मिटिंग का आयोजन किया गया। सभी के आपसी विचार विमर्श के बाद उन लोगों ने एक विशेष निर्णय पर आखिरीं मोहर लगा दी।

दूसरी ओर जब विकास नगर के प्रमुखों को गौतम कॉलोनी की गुप्त मिटिंग की जानकारी मिली, तब वहाँ भी गणमान्य व युवकों की एक संक्षिप्त सभा बुलायी गयी। चूँकि गौतम कॉलोनी के आगत कार्यकर्मो का पता इन लोगों को नहीं चल सका था, अतएव इन्होंने भी आपसी सलाह–राय से कुछ करने की ठानी। वैसे ही उन्होंने प्रोग्राम बनाया।

एक महीना पूर्व ही दोनों स्थानों के लोग अपनी–अपनी व्यवस्था गुप्तरुप करने लगे। आर्थिक पहलू व समस्या का भी उनलोगों ने गम्भीरता से निपटाया। लेकिन दोनों की व्यवस्था लीक प्रुफ चलता रहा। कार्यक्रमों की जानकारी वहाँ के कुछ गिने–चुने व्यक्तियों को ही सिर्फ थी। उभय पक्ष एक दूसरे के कार्यक्रम से अनभिज्ञ रहे। इसके पहले ऐसा लीक प्रुफ प्रोग्राम कभी भी नहीं बना था। दोनों तरफ अपने–अपने इलाके के चौराहों पर दिखावटी तौर पर जलाने योग्य वस्तुओं का ढेर लगने लगा। लोग साधारण तौर पर दौड़–धूप कर रहे थे। होली दहन के दिन तक दोनों तरफ चौराहों पर ठपलों, लकड़ियों, रद्दी काठ केवाड़ियों की ऊँचाई महल जैसी लगने लगी। अन्त में पूर्णिमा रात्रि में इसके उद्घाटन के साथ दोनों के कार्यक्रमो की पेशी भी धूमधाम से सम्पन्न हो गया।

दूसरे दिन कुछ लोगों को तथा उसके दूसरे दिन स्थानीय अखबारों के माध्यम से नगरवासियों एवं अन्य ज़गहों के लोगों को इन भव्य आयोजनों के बारे में जानकारी मिली। तब नागरिकों को दोनों कॉलोनी के लाजवाब प्रोग्रामों का पता चला। अखबार नविसों ने उनके कारनामों को दाद देते हुए लिखा कि होली की चिन्गारी भी कभी कुछ लोगों को खुशियों से सराबोर कर देगा। ऐसा कार्यक्रम इसके पूर्व कभी भी देखा व सुना गया। अखबारों की खबर निम्नलिखित तौर पर लोगों को मालूम हुआ।

गौतम कॉलोनी में होलिका दहन का उद्घाटन स्थानीय पार्षद के हाथों सम्पन्न हुआ। इस कॉलोनी वालों ने अपने आसपास के गरीब नागरिकों जैसे सामाजिक, आर्थिक रुप से पिछड़े लोगों के साथ–साथ मुस्लिम भाईयों को भी खुशियों से सराबोर कर दिया। होली के अवसर कॉलोनी से एकत्रित चंदों से तीस औरतों, मर्दो तथा बच्चों के कपड़े, रंगों व पिचकारी पार्षद के हाथों बँटवाया। उसके बाद होलिका दहन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उसके उपरांत सामुहिक रुप से होली पकवानों के स्वादों का लुत्फ सभी ने छककर किया। जिससे आर्थिक रुप से पिछड़ों तथा मुस्लिम परिवारों ने भी तर–माल का मजा लिया। वे सभी गौतम कॉलोनी के आर्थिक रुप से सहायता करने वाले धनाढ्यों का उसी मंच पर से आभार प्रकट किया।

Scanned by CamScanner

दूसरी तरफ अखबारों में विकास नगर की प्रशंसा भी दिल खोलकर हुई। क्योंकि यहाँ के निवासियों ने होली के अवसर पर एक अच्छी परम्परा कायम किया। ऐसा कार्य किया जो देश के किसी भाग से अलग था। विकास नगर के प्रबुद्धों ने आर्थिक रुप सें कमजोर व असहायों की पाँच कुँवारी बेटियों को छाँटा। उन सबों के लिए योग्य युवकों का चयन किया। उन युवकों के परिवार वालों से विवाह सम्बन्धी सभी से बातें की। उसके बाद अपने कॉलोनी के चयनित पाँचों बेटियों के परिवार को अपने विश्वास में लिया। उनके बेटियों को लड़कों के परिवारवालों को दिखलाया। पसन्द होने पर सभी दसों परिवारों को होलिका दहन के ही दिन विवाह बंधन का प्रबंध रखा। पूर्णिमा के दिन होलिका दहन के पूर्व ही पाँचों जोड़े लड़के–लड़कियों का विवाह संस्कार सामुहिक रुप से एक ही मंडप में किया गया। उस इलाके के विधायक महोदय स्वयं उसमें उपस्थित थे। उन्होंने भी अपने विधायक कोष से एक अच्छी रकम ऐसे कार्यक्रम में देकर समाज के निवासियों के निगाह में एक अच्छा स्थान बनाया। शादी कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हो गया। विधायक महोदय ने अपने हाथ से प्रत्येक विवाहित जोड़ों को एक निश्चित रकम के साथ–साथ घरेलू सामग्री का उनके बीच बाँटने में सहायता की। इस तरह उन पाँच परिवार के बेटियों को इस होली के अवसर पर नया घर वर दिया।

इसके उपरांत विधायक महोदय ने अपने भाषण के माध्यम से समाज में ऐसे ही नए–नए आयोजनों पर बल दिया। और लोगों को सुझाव दिया कि समाज के आर्थिक रुप से पिछड़ों को जहाँ तक हो सके सहायता देने की चेष्टा करें। उनके हिसाब से यदि ऐसा सामुहिक विवाह का कार्यक्रम किसी संगठन आदि के माध्यम से सम्पन्न होने लगे तो समाज में विवाह संबंधी बहुत सारी बुराईयाँ स्वतः समाप्त हो जायेगी। इस अच्छे कार्यक्रम के लिए आयोजकों की भूरि–भूरि प्रशंसा मुक्त कंठ से किया गया। ऐसे में, प्रिंट मीडिया वालों ने भी इस कार्यक्रम की बड़ाई दिल खोलकर अपने अखबारों के माध्यम से किया। विवाह कार्यक्रम और होलिका दहन के उपरांत वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने सामुहिक रुप से होली के मिष्ठानों के अलावा ठंडे पेय आदि का भरपूर आनन्द उठाया। सभी ने आपस में अबीर लगाकर छोटों–बड़ों या ऊँच–नीच का विभेद को मिटा दिया। जिससे वहाँ के लोगों को चाहे वे नर–नारी या बच्चे हो सभी को अवर्णणीय स्वाद व सुख मिला।

इस प्रकार दोनों कालोनीवासियों के कार्यक्रमों व प्रोग्रामों का महत्व अपने–अपने क्षेत्रों में अलग–अलग ढंग से आनन्द मिला। दोनों कॉलोनी वासी ऐसे कार्यक्रम से धन्य–धन्य हुये।

प्रताप नारायण बरनवाल
कैंमा शिकोह
पटना सिटी

भारत की प्रथम महिला

राष्ट्रपति	–	प्रतिभा पाटिल
प्रधानमंत्री	–	इंदिरा गाँधी
लोकसभा सांसद	–	मीरा कुमार
सांसद	–	राधा बाई
राज्यपाल	–	सरोजनी नायडू
शासिका	–	रजिया सुल्तान
आई.ए.एस.	–	अन्ना जार्ज
आई.पी.एस.	–	किरण बेदी
मुख्यमंत्री	–	सुचेता कृपलानी
केन्द्रीय मंत्री	–	अमृता कौर
काँग्रेस अध्यक्ष	–	एनी बेसेन्ट
अशोक चक्र विजेता	–	ग्लोरिया बेरी
मिस वर्ल्ड	–	रीता फारिया
भारत रत्न	–	इंदिरा गाँधी
मुख्य न्यायाधीश	–	लीला सेठ

Scanned by CamScanner

शिक्षा, शिक्षक और समाज
(विचारक श्री श्री ठाकुर अनुकूल चन्द्र)

देश को आजाद हुए लगभग 72 वर्ष हो चले। इतनी लम्बी अवधि में देश में अनेक परिवर्त्तन हुए। भूख संबंधी हमारी जटिल समस्या बहुत हद तक दूर हुई। वस्त्र के मामले में भी हमारी अर्द्धनग्नता भी बहुत हद तक कम हुई और इस क्षेत्र में तो हम विलासिता की ओर बढ़ चले। आवासीय स्थिति भी लगभग 70% लोगों की सुधर गई। पर शिक्षा का स्वरुप नहीं बदला। लॉर्ड मैकाले का दिया हुआ फार्मूला आज भी हम ढो रहे हैं, भले ही हमारी साक्षरता का प्रतिशत में बहुत बड़ा इजाफा हुआ है। नारी आंदोलन के तहत नारी शिक्षा की बहुत हद तक प्रगति हुई है। तात्पर्य यह कि जो स्थिति बीसवीं सदी में थी वह इक्कीसवीं सदी में नहीं रही। यत्र–तत्र सर्वत्र देश में विकास ही विकास दिख रहा है। हमारी शहरी आबादी दिनोंदिन सघनता की ओर बढ़ती चली जा रही है। वहीं ग्रामीण समस्या अभी भी पिछड़े पठारी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में विकराल मुँह बाये हुए हमें चिढ़ा रही है। ऐसा क्यों ? क्योंकि हमारी शिक्षण–पद्धति में कोई बदलाव अब तक नहीं हो पाया है। आज शिक्षा, शिक्षक, समाज या सरकार कीं वही पुरानी मान्यता है जिन्हें आज भी हम दोनों को बाध्य हैं। इस पंक्ति पर विस्तृत चर्चा करने के पूर्व हम शिक्षा संबंधी अपने आध्यात्मिक गुरु स्व. श्री श्री ठाकुर अनुकूल चन्द्र चक्रवर्ती के विचारों को ज्यों का त्यों आप पाठकों के समक्ष उपस्थित करना चाहेंगे जिसे हमने सत्संग कार्यालय देवघर से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'सात्वती' के मई 2018 के अंक ''कथा निर्झर'' पृष्ठ सं. 10 से लेकर 17 तक में उद्धत किया है। कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा कि श्री श्री ठाकुर सर्व समस्या समाधान का दूसरा रुप थे। उनके पास जो भी किसी समस्या को लेकर जाता था, उसका समाधान उसे अवश्य मिल जाता था। ऐसे तो देश में अनेक शिक्षाविद् हुए। विदेशों में भी शिक्षा विदों की कमी नहीं रही। पर श्री श्री ठाकुर का विचार बहुत हद तक अलग किस्म का था। आप इस उद्धरण को पढ़कर स्वतः समझ जाएंगे कि शिक्षा संबंधी उनकी पैठ कितनी गहरी थी।

श्री श्री ठाकुर के अनेक भक्तों में से एक विदेशी भक्त थे हाउसर मैन दा। उन्होंने 30.10.1945 को वार्त्तालाप के क्रम में श्री श्री ठाकुर से पूछा – ''पुरुष और नारी की सह शिक्षा के संबंध में आपका क्या विचार है ?'' इस पर श्री श्री ठाकुर बोले – ''ऐसी शिक्षा से भलाई नहीं हो सकती है। अति नैकट्य तृप्ति के साथ दुर्बलता का प्रश्रय के कारण एक दूसरे के प्रति आकर्षण के कारण दोनों प्रकृतिगत वैशिष्ट्य खोकर ऐसे बन जाते हैं कि पुरुष–नारी सुलभता का एक–एक उद्भट संस्करण बन जाते हैं। एकान्तिक मोह से पुरुष अपने चिन्ताचलन, हावभाव, पोषाक आदि में नारी की तरह बनना चाहता है। नारी भी उसी प्रकार अस्वाभाविक तरह के पुरुषों चित हाव–भाव और भंगिमा अपनाती है। इस प्रकार सारे उपादान और शक्ति विकृत प्रकृति के हो जाते हैं। इस प्रकार प्रवृति की पवित्रता स्खलित हो जाती है, वंश साधारणः दुर्बल और विकृत हो जातां है। इस तरह उसका नतीजा बड़ा बुरा होता है। इसलिए मेरे मतानुसार माँ को पारिवारिक शिक्षा के अलावा सह शिक्षा देना उचित नहीं है। सह शिक्षा का परिणाम बड़ा बुरा होता है। इससे नारी के विषय में क्रमगत निष्प्रयोजन, अस्वाभाविक, निष्फल, यौन कल्पना के फलस्वरुप स्वतः दाम्पत्य जीवन में पुरुष की तरह पूज्य चाहती है एवं उसके फलस्वरुप स्वतः निष्कृष्ट के प्रति आनत होती है जिससे वह व्यक्ति उसका गुलाम बनकर रहे, और नतीजा यह होता है कि देश में अगणित निकृष्ट विकृत संतान का जन्म होता है। यदि नारी पुरुष में सम्मान योग्य व्यवधान नहीं रहता तो दोनों के स्वास्थ्य, स्वाभाविक यौन संवेग लुप्त कर जाते हैं। प्राणहीन, कृत्रिम, दुर्बल यौन जीवन से शक्तिमान जीवन प्रस्फुटित नहीं

Scanned by CamScanner

होता है और जाति का पतन हो जाता है। मैं सोचता हूँ, इस तरह की नैतिक दुर्बलता ही फ्रांसिसियों के पतन के अन्यतम कारण हैं (एक समय फ्रांसिसियों की ऐसी ही दुर्दशा हुई थी)। सारे यूरोप, अमेरिका आज भी यदि इस विषय में सावधान न हो तो निकट भविष्य में इसके विषमय फल उन्हें भोगने पड़ेंगे। (वर्त्तमान में अमेरिकी किशोर कितना हत्यारा और अपराधी हो रहे हैं, इन्हें तो हम देख–सुन रहे ही हैं जिसकी भविष्यवाणी श्री श्री ठाकुर ने आज से 70–75 वर्ष पूर्व ही कर दी थी)। धर्म कृष्टि और वैशिष्ट्य विध्वंसी बुद्धि एवं सह शिक्षा इन दो चीजों ने हमारे देश के मेरुदण्ड को तोड़ दिया है। जैसे आघात मिले हैं, उन्हें संभाल लो, भारत कब पुनः स्वस्थ होगा उसे परम पिता ही जानें। इन दो चीजों ने भारतीय वक्ष पर जैसा मारन–प्रभाव विस्तार किया है उसके काल–शिकंज से संपूर्ण मुक्त होना संभव है या नहीं, कह नहीं सकता।

प्रसंगतः नारी निर्यातन के संबंध में बातें चलीं। इस पर श्री श्री ठाकुर ने कहा – नारी यद्यपि दुर्बल है पर भगवान ने उसे ऐसा रक्षा–कवच दिया है कि पुरुष जितना ही कामोन्नत हो, उसके सर्वनाश–साधन के लिए अग्रसर भले ही हो, वह यदि फटकारती हुई उसे किसी तरह एक मानसिक आघात दे सकी तो वह निरस्त होगा ही – आगे बढ़ने का साहस नहीं होगा।''

इस पर हाउजर मैन दा ने श्री श्री ठाकुर से पूछा – ''जहाँ नारी की इच्छा नहीं रहती है एवं खूब रोती–बिलखती हुई अनुनय विनय करती है, फिर भी दुष्ट लोग उस पर बलपूर्वक अत्याचार करते हैं, वहाँ भी क्या यह बात लागू हो सकती है ?''

इस पर श्री श्री ठाकुर बोले – ''वह चाहे रोती रहे या जो कुछ भी करे, जब तक मानसिक आघात देकर उसे परास्त नहीं कर देती है तब तक यह समझना चाहिए कि उसके अन्दर सतीत्व का वह अमनीय तेज नहीं है जो शैतान के शैतानी को तहस–नहस कर दे। पराक्रम ही है निष्ठा का साथी। पराक्रम में कमी रहने पर निष्ठा में भी कमी रहती है। इसका अर्थ यह नहीं कि नारियों की मर्यादा की रक्षा में पुरुष का कोई दायित्व नहीं है। ऐसा जी–जान से करना होगा ? उस दिन तो बात यही रुक गई। दूसरे दिन हाउजर मैन दा ने पुनः श्री श्री ठाकुर से प्रश्न किया – ''किसी छात्र के घर का प्रवेश यदि शिक्षा के अनुकूल नहीं है तो क्या स्कूल के जरिये उसे सुधारा जा सकता है ?''

ऐसे में श्री श्री ठाकुर का उत्तर था – ''ऐसा संभव है, पर शिक्षकों की ओर से छात्रों के अन्दर अनुराग और क्षमता का संचार होना चाहिए। शिक्षकों को यह देखना है कि किस प्रकार छात्रों की मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुजन के प्रति भक्ति बढ़ सके। प्रयोजनानुसार शिक्षक अभिभावक के साथ योगायोग कायम किये रखेंगे। अर्थात् अर्जन में पटु काम में साश्रयी और उसका सुन्दर समापन देखकर ही किसी व्यक्ति के संबंध में कहा जा सकता है कि उसकी दक्षता कैसी है। दक्षता का मापयंत्र यही है कि किसी वास्तविक काम में लगाकर छात्रों में अभ्यास और गुण प्रस्फुटित करना होगा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि साधारण स्कूल खोलने के बजाय लिखाई––पढ़ाई की व्यवस्था सहित दारिद्रयश्याधि निराकरणी विद्यालय जितना अधिक हो उतना अच्छा है। हर देश में इसका प्रयोजन है। तथाकथित शिक्षा मनुष्य को अक्षम तथा आलसी बना देती है – उसके प्रकृति प्रदत्त सद्‌भ्यास को नष्ट कर देती है। इससे सेवा देने की जगह वह प्रताड़ना का कला कौशल अधिक सीखता है, उसके व्यवहार में कोई परिवर्त्तन नहीं आता है। अंग्रेजी में behavior (व्यवहार) जैसे शब्द का अर्थ है – be and have (होओ एवं पाओ)। अर्थात् जो पाना चाहते हो, उसके अनुसार योग्यता अर्जन करो, अपने चरित्र को उसी तरह नियंत्रित करो। यदि अच्छी तरह दरिद्रव्याधि संशोधन विद्यालय चलाया जाय तो योग्यता हीन माँग या पोषण हीन शोषण की बला नहीं रहेगी। इसका अर्थ यह नहीं है कि जिसके पास रुपये हैं, वह दारिद्रय व्याधि नहीं होगा। जो साधारणतः दारिद्रय व्याधि ग्रस्त हैं उनका आवेग देने तथा करने के बजाय पाने की और अधिक रहता है। उन्हें काम में न आनन्द मिलता है और न ही मन लगता है, सेवा करने का संवेग नहीं रहता है, जिससे वे पाते है, उसे उच्छल करने की बुद्धि नहीं रहती है, सिर्फ पैसे की ओर नजर रहती है।

Scanned by CamScanner

धनी तथा गरीब में भी ऐसे लोग हैं। शिक्षा के द्वारा उनलोगों के अन्दर करने तथा देने का आवेग प्रस्फुटित कर देना चाहिए। उनलोगों के अभ्यास तथा व्यवहार को व्यवहारिक बना देना चाहिए। इसके लिए उन्नत ढंग के शिक्षक ही सर्वप्रथम एवं सर्वप्रधान प्रयोजन है। यदि ऐसे शिक्षक आ जाएं जो कुछ आवश्यक है एवं छात्र संग्रह करने की जो समस्या है, सभी का समाधान होकर ही रहेगा। जो शिक्षक दारिद्रय व्याधि ग्रस्त को शिक्षा देने जाएंगे वे यदि स्वयं आदर्श में अटूट रुप से युक्त न हो तो उनमें भी दारिद्रय व्याधि संक्रमित होने की संभावना रह सकती है। किन्तु अटूट आदर्शानुसार ये निरत रहकर उन्हें अपने आपको हीनत्व–अध्युषित पारिपार्श्विक से प्रभाव मुक्त रखना पड़ेगा।''

इस पर हाउजर मैन दा ने श्री श्री ठाकुर से पूछा – ''स्कूल के बाहर बच्चों का दायित्व किस पर रहेगा ? क्या ऐसा दायित्व राष्ट्र ले सकता है ?''

उत्तर में श्री श्री ठाकुर बोले – ''उस समय उनलोगों का दायित्व समवेत रुप से परिवार, परिवेश, शिक्षागार एवं राष्ट्र पर न्यस्त रहेगा। सिर्फ मुझे अपने घर के बच्चों का दायित्व नहीं लेना है प्रत्युत अगल–बगल के बच्चों की भलाई के लिए मुझे क्षमतानुसार दायित्व ग्रहण करना होगा। उनके साथ ही साथ मेरा भी स्वार्थ जड़ित है। यदि वे अच्छे होते हैं तो मुझे भी अपने घर के बच्चों को मनुष्य बनाने में आसान होगा। हमें राष्ट्र में ऐसी एक उन्नत आवोहवा लाने की कोशिश करनी होगी जिससे हर लड़का सत् बनने की प्रेरणा पा सके। इसके अलावा वे सत् को पुरस्कृत करेंगे, मर्यादा को आसन देंगे एवं असत् को किसी तरह भी प्रश्रय नहीं देंगे। यदि राष्ट्र सत् का समादार तथा सम्मान करे तो हर व्यक्ति ही सत होने का प्रेरणा पाता है। इसलिए यदि राष्ट्र धर्म और कृष्टि को उपासक होता है, सत् और सुधि व्यक्ति व्यक्तियों का उत्साह दाता होता है तो सबका मंगल हो सकता है।''

स्पेंशर दा – ''स्कूल का आय–व्यय एवं परिचालन कैसे होगा ?''

श्री श्री ठाकुर – आधा सरकारी स्कूल रहना ही अच्छा है। राष्ट्र और जनसाधारण का आर्थिक सहयोग रहेगा पर आन्तरिक परिचालन शिक्षक ही करेंगे। राष्ट्र के लिए यह उचित है कि सरकार के सर्वोच्च कर्मचारियों से भी बढ़कर शिक्षकों को अधिक मर्यादा दें एवं शिक्षकों के साथ किये गए आचरण एवं व्यवहार से श्रद्धाभिनन्दन वास्तविक रुप से दस लोगों में प्रकट रुप से प्रस्फुटित होना चाहिए। जिस प्रकार राज्यपाल या Premier के निकट जब भी कोई शिक्षक जायें तो उन्हें तत्क्षण ही उठकर खड़े हो कर गहूरी, श्रद्धा सहित उनकी अभ्यर्थना करनी चाहिए। (उठकर श्री श्री ठाकुर ने आँखें मूँद ली और हाथ जोड़कर कायदा बताया)। यदि राष्ट्र शिक्षक को इतनी मान्यता दे, उन्हें दस लोगों के सामने गौरवान्वित होकर ऊपर उठाएं तभी छात्रों में शिक्षकों के प्रति श्रद्धा, समीह, आनुगत्य का भाव बढ़ सकता है। शिक्षकों को ऐसी श्रद्धा, मूल्य, मर्यादा इसलिए इतनी देनी चाहिए क्योंकि वे ही कृष्टि जीवन एवं आलोक के देवदूत होते हैं। ब्राह्मण स्वाभाविक शिक्षक हैं, इसलिए समाज में उतना समादर है। शिक्षक तथा ब्राह्मण को उतनी मान्यता देने का अर्थ है, कृष्टि जीवन और आलोक को जातीय जीवन में उसके योग्य गौरव के आसन पर आप्राण आवाहन से सुप्रतिष्ठित करना।

अमेरिकन लोग इतनी श्रद्धा और आग्रह सहित श्री श्री ठाकुर की बातें सुन रहे हैं। यह देखकर ग्राम के अनेक व्यक्ति कौतुहल होकर डिस्पेंशरी के निकट आ चुके हैं। बालकों में सभी एक–एक कर अंगुलि द्वारा इशारा कर सभी एक दूसरे को दिखा रहे हैं।

बातचीत के सिलसिले में श्री श्री ठाकुर ने केष्टो दा से कहा – ''यदि शिक्षकगण ऐसे होते हैं, तो राष्ट्र उनकी श्रद्धा करेगा ही। सब कुछ उनकी योग्यता पर निर्भर करता है।''

श्री श्री ठाकुर – ''चरित्र रहने पर भी यदि राष्ट्र उसे स्वीकार नहीं करता है तब तो काम नहीं होगा। यीशु ने कितना किया, किन्तु राष्ट्र ने उन्हें स्वीकार करने के बजाय उल्टा रंग या सूली दिया जिसके फलस्वरुप राष्ट्र एवं जनसाधारण वंचित हुए। यदि राजशक्ति प्रवृत्ति द्वारा शासित होती है तो लोगों की कैसी दुर्दशा हो सकती है, यह कहा नहीं जा सकता है। राजशक्ति की सहायता और

Scanned by CamScanner

समर्थन से ही मनुष्य का अस्तित्व सुरक्षित और दृढ़ होती है। इसी लिए राष्ट्र जो कुछ स्वीकार करता है उसे ही साधारण व्यक्ति को आयत्त करने के लिए आग्रह बोध रहता है। इसीलिए राष्ट्र को यह उचित है कि वह अच्छे लोगों के प्रति यथोपयुक्त समादर एवं सम्मान दिखाएं, उन्हें हर तरह का मौका दें जिसके फलस्वरुप स्वार्थ के हित अच्छा बनने का प्रयोजन समझे। ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है जो दुःख, कष्ट निपीड़न की उपेक्षा कर अच्छे को जकड़कर पकड़ सके। यही है निष्ठा का मापदण्ड।''

स्पेंशर दा – ''स्कूल एवं राष्ट्र के बीच कैसा सम्पर्क रहेगा ? बहुधा यह देखा जाता है कि राष्ट्र की सहायता लेने के लिए राष्ट्र की ओर से बहुत कुछ अवांछनीय हस्तक्षेप होता रहता है।''

श्री श्री ठाकुर – आभ्यन्तरीन परिचालन का भार स्थानीय कतृपक्ष के आधार पर छोड़ देना चाहिए। राष्ट्र परामर्शदाता होगा। राष्ट्र की सहायता लेने के कारण वहाँ से यदि आदर्श विरोधी अवांछनीय हस्तक्षेप होने की संभावना रहे तो जनसाधारण के निकट से जमीन एवं आर्थिक सहायता संग्रह कर स्कूल को सर्वदा के लिए आत्मनिर्भरशील बनाना होगा। ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे राष्ट्र की सहायता लेने का प्रयोजन न रहे। शिक्षकों को स्वाधीनता रहनी चाहिए। शिक्षा परिचालन या योजना को कार्यान्वित करने के लिए राष्ट्र की तरह विश्वविद्यालय का स्वतंत्र रहना चाहिए। राष्ट्र के अनुदार ख्याल और हस्तक्षेप को कमी बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। यदि समाज और शिक्षा मन्दिर को स्वतंत्रता रहता है तो उनके द्वारा प्रयोजनानुसार राष्ट्र यंत्र का संशोधन किया जा सकता है, किन्तु सभी यदि राष्ट्र के पिछलग्गू और कुशिगत हो पड़े तो राष्ट्र की त्रुटि–विच्युति का संशोधन कौन करेगा? इसलिए ब्राह्मण लोग कभी राष्ट्र के वेतन पर निर्भर होकर राष्ट्र की नौकरी करना पसंद नहीं करते थे। यह याद रखना होगा, मनुष्य के बचने–बढ़ने की विनाशकारी राष्ट्र व्यवस्था के आधिपत्य को मनुष्य कबूल नहीं कर सकता है। इसीलिए राष्ट्र का प्रधान कर्त्तव्य होता है, हर के वैशिष्ट्यानुसार बचने–बढ़ने का सरजाम जुटाना।''

स्पेंशर दा – ''आजकल प्रायः देखा जाता है कि हर राष्ट्र अपनी शिक्षा व्यवस्था के द्वारा अपने मुताबिक एक असंपूर्ण राजनैतिक मतवाद या जीवन दर्शन को सही समझकर छात्रों में प्रचार करते हैं एवं उसके अनुसार ही एक चिन्ता प्रणाली और झोंक पैदा कर देते हैं इसका क्या प्रतिकार है ?''

श्री श्री ठाकुर – ''यदि शिक्षा की नींव धर्म नहीं रहे एवं यदि शिक्षा का कोई उद्देश्य धर्म की परिपूर्ति नहीं हो तो ऐसा अस्वाभाविक झोंक पैदा होगा ही। यदि हम धर्म चाहते हैं तो उसके साथ ही साथ आदर्श भी चाहेंगे – जिसमें धर्म का रुप दीख पड़ता है। यह भी बात सत्य है कि जो राजनीति धर्म की परिपूर्ति नहीं करती, वह किसी काम की नहीं है। कारण धर्म वही है जो हमारे जीवन और वृद्धि को सर्वतोभाव से धारण कर रखता है। (स्मरण रहे कि श्री श्री ठाकुर की दृष्टि में धर्म का अर्थ स्वयं बढ़ना तथा औरों को भी बिना किसी भेद–भाव के बढ़ने देने में सहयोग करना है।)

हाउजर मैन दा – ''शारीरिक सजा के विषय में आपका क्या मत है ?''

श्री श्री ठाकुर – ''घूम–घूमकर बैठे शिक्षक इतने प्रेमिक एवं श्रेष्ठ होंगे कि वह यदि छात्र के साथ एक दिन बात नहीं कर सके तो वह उनके लिए शारीरिक सजा प्रतीत हो। शारीरिक सजा का वहीं समर्थन किया जा सकता है जहाँ किसी छात्र के बुरे पथ से बचाने की आवश्यकता हो। पर यह स्वीकार करना होगा कि जहाँ ऐसा प्रयोजन हो जाता है वहाँ शिक्षक के लिए गौरव की बात नहीं है। श्री श्री ठाकुर के कहने का तात्पर्य यह कि गरीबी या विवशता के कारण अगर कोई छात्र चोरी करता है तो उसकी आर्थिक सहायता कर मनोवैज्ञानिक ढंग से उसे सही रह पर लाया जा सकता है।

इसके बाद संवाद का प्रसंग बदल गया और जब श्री श्री ठाकुर से स्पेंशर दा ने राष्ट्र एवं माता–पिता का दायित्व सजा के विषय में पूछा तो उन्होंने सिर्फ इतना कहा कि सजा के विषय में अपराधी को सजा जीवन सुधार के लिए होना चाहिए न कि अपराधी बनाने के लिए।

शेष अगले अंक में तब तक मुझे आज्ञा दीजिए। प्रसंग लंबा न हो जाय, अतः क्षमा चाहता हूँ।

क्रमशः जारी.....।

श्रीमती तारा देवी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़, पतरातू

Scanned by CamScanner

जड़ों की ओर

''उस किताब को तुम देख रही हो'' देवजीत देवबर्मन उससे मुस्कुराकर बोला – ''उसने मेरा जीवन बदल दिया था।''

''वह कैसे'' माधवी उत्सुकता से भरकर बोली – ''जब वह किताब तुम्हारी थी, तो तुमने उसे म्युजियम में क्यों दे दिया ? और उस किताब ने कैसे तुम्हारा जीवन बदल दिया ?''

''यह भी एक कहानी है। या संयोग जैसा कुछ कह लो। मुझे वह किताब मेरी माँ के एक पुराने संदूक में पड़ी मिली थी। उनका देहांत मेरे छुटपन में ही हो गया था। वह पढ़ी–लिखी तो नहीं थी। मगर उन्हें लिखने–पढ़ने का बेहद शौक था। उन्होंने स्वयं ही देख–सुनकर लिखना– पढ़ना सीख लिया था। वह किताब त्रिपुरा की प्राचीन काक–बरक भाषा में और बंगला लिपि में लिखी गई है। मुझे मेरी माँ ने यह भाषा सिखलाई थी। इसलिए मैं स्थानीय काक–बरक भाषा समझता–बोलता ही नहीं, बल्कि पढ़ भी लेता हूँ। तुम्हें तो पता ही है कि हम त्रिपुरा राजघराने से ताल्लुक रखते थे। मगर राजतंत्र खत्म होते ही सारा वैभव, सारा ऐश्वर्य ख़त्म हो गया था और हम सड़क पर आ गए थे।''

''इसके बाद क्या हुआ।''

''छोड़ो यह सब बातें'' वह उपेक्षा में भरकर बोला –''वह सब एक दु:स्वप्न की तरह था। कल सुबह हम त्रिपुरा का वह भव्य राजमहल देखने जाएंगे, जो अब यहाँ का विधान सभा भवन है।''

माधवी ने स्पष्ट देखा कि अतीत की बातें करने पर देवजीत के चेहरे पर विषाद की छाया मंडराने लगी है, तो उसने बात को वहीं छोड़ उसके साथ वापस लौट चली। आज त्रिपुरा के अगरतला स्थित स्टेट म्युजियम को देखकर उसे यहाँ के बारे में बहुत सारी जानकारी मिली थी। मगर देवजीत ने उसे जो बताया था, उसे जानकर वह आश्चर्यचकित थी। किताबें महत्वपूर्ण होती हैं। तब और, जब वह बहुत पुरानी और पांडुलिपि रुप में हों। तब उनका ऐतिहासिक महत्व बढ़ जाता है। शीशे की आलमारी में बंद उस पुस्तक को वह छूना चाहती थी, जिसे देवजीत के किन्हीं पुरखे ने लिखा होगा और जो उसकी माँ के पास सुरक्षित रखा था। एक तरह से अच्छा हुआ कि यह पुस्तक म्युजियम में आ गया। अन्यथा वह उसके घर में पड़ा–पड़ा यूँ ही बरबाद हो जाता। शायद यही भाग्य हैं, जो समय के थपेड़े खाकर स्वर्ण को मिट्टी में और मिट्टी को स्वर्ण में बदल देता है। यह समय ही तो है, जो राजा को रंक और रंक को राज़ा में बदल देता है।

देवजीत उसका पति है। और उसी के आग्रह पर पूरे पाँच साल बाद वह इधर अगरतला आया है। जब भी वह उसे इधर आने को कहती है, वह यात्रा संबंधी बहाने बनाकर टाल जाता था। कहता कि पहले दिल्ली से गुवाहटी जाओ। वहाँ से फिर छोटी लाइन वाली ट्रेन पकड़कर चौबीस घंटे की यात्रा कर त्रिपुरा के एक छोटे से स्टेशन कुमारघाट पहुँचो। और फिर वहाँ से रात भर का बस सफर कर ही अगरतला पहुँचा जा सकता है। लगभग एक सप्ताह तो लग ही जाएंगे पहुँचने में। जिस पर रास्ते में सैकड़ों सुरंगें मिलती हैं। कब कहाँ लैण्ड स्लाइडिंग होकर पहाड़ का पत्थर–मिट्टी धसंक जाए और रास्ता ब्लॉक कर दे, पता नहीं होता। परेशानी तब और बढ़ जाती है, जब चलती ट्रेन बीच रास्ते कहीं जंगल में रुक जाती हैं। न खाने का, और न पीने का ठिकाना। क्या करोगी उधर जाकर ?

एक बार तो उसने यहाँ तक कहा कि वह हवाई जहाज से ही चले। हर स्त्री की हसरत होती है कि एक दिन वह ससुराल जायेगी। उसका जन्म कर्म सब दिल्ली में हुआ था। और शादी भी हड़बड़ी में कोर्ट मैरिज के रुप में दिल्ली में ही हुई थी। मगर फिर भी वह भी तो अपना पति–गृह देखना चाहती हैं। मगर वह फ्लैट और गाड़ी के ईएमआई ऋणों की भुगतान का बहाना कर टाल देता था। इस बार जो उसने सुना कि अगरतला के

Scanned by CamScanner

लिए दिल्ली से राजधानी एक्सप्रेस खुल रही है, तो वह अपनी उत्सुकता रोक नहीं पाई थी और अगरतला जाने के लिए जिद पकड़ बैठी थी। हार मानकर देवजीत ने उसे बताया कि अप्रैल में उसके गाँव में 'गरिया त्योहार' के समय जाना बेहतर होगा, तो वही राजधानी एक्सप्रेस की दो टिकटें खरीद कर ले आई थी। अप्रैल में छुट्टी मिलना भी आसान था। हालाँकि उसके विद्यालय में जहाँ वह शिक्षिका थी, नया सत्र आरंभ हो जाता था। मगर प्रिंसिपल ने उसे बीस दिन की छुट्टी मंजूर कर दी थी। और देवजीत को भी उसके कार्यालय में छुट्टी मिलने में असुविधा न रही थी।

यहाँ उसने देवजीत के लंबे–चौड़े परिवार को देखा, जो पुराने अगरतला के एक विशाल परिसर में बने अनेक घरों में बसे हुए थे। यह इलाका दरअसल एक गाँव ही था जो विकसित होते अगरतला शहर के जद में आ गया था। कहने के लिए देवजीत इस घर का एक हिस्सा था। मगर जैसे उसने ही स्वेच्छा से यहाँ का अपना हक और हिस्सा सब कुछ छोड़ रखा था। अभी वह जैसे इस घर के मेहमान समान थे। उसका एक बड़ा भाई, जिनका शहर में हार्डवेयर की बहुत बड़ी दुकान थी, उसी के घर में वह ठहरे थे।

''पूरे पाँच साल बाद आ रहे हो तुम। अपनी जन्मभूमि को भुला देना कोई अच्छी बात तो नहीं।'' उसके भाई बोले थे – ''यहाँ नहीं रहना है, तो मत रहो। मगर यहाँ आते–जाते रहने में क्या बुराई है !''

''ठीक है, अब आता–जाता रहूँगा'' देवजीत ने संक्षिप्त सा जवाब दिया था।

यह इत्तफाक ही था कि यहाँ पहुँचने के अगले दिन ही वह म्युजियम देखने आ गये थे। कारण कि वह नजदीक में था। और माधवी की इतिहास में रुचि थी। म्युजियम घूमने के बाद वह शहर का एक चक्कर लगाकर घर वापस लौटे थे। घर आकर खाना खाकर वह सोने चला गया। मगर नींद थी कि आ नहीं रही थी। बार–बार वह महल उसके सामने कभी अपनी वर्तमान की भव्यता के साथ, जो अभी त्रिपुरा का शानदार विधान सभा भवन है साकार हो जाता, तो कभी अतीत के पुराने रुप में सामने आ जाता था, जब उसने उसे वीरान और खंडहर समान उजाड़ रुप में तीसेक साल पहले देखा था। माधवी को अपने अतीत के बारे में क्या बताए वह ! क्या सोचेगी वह कि राजघराने का एक सदस्य क्या इस रुप में भी जीवन देख सकता है !

राजघराना तो बाद में बिखरा, उसके पहले ही उसका परिवार सड़क पर आ चुका था, जब सत्ता के खेल में उसके दादा को महल से ही बेदखल कर दिया गया था। उन्हें संगीत में रुचि थी, सो उसी सिलसिले में उनका कलकत्ता और मुंबई भी आना–जाना लगा रहता था। इसके अलावा वह राजतंत्र के बजाए लोकतंत्र पर यकीन करने लगे थे। दरअसल उन दिनों देश भर में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जन–आंदोलनों की धूम थी। कलकत्ता और बंगाल जैसे आंदोलनों के केन्द्र में थे। जाहिर है बंगाल के बगल में बसा त्रिपुरा इससे कैसे अछूता रहता। उधर त्रिपुरा राजतंत्र ब्रिटिश सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आंदोलनों को कुचलने में लगा था। ऐसे में राजपरिवार का ही एक सदस्य आंदोलनकारियों के प्रति सहानुभूति रखे और उन्हें सहयोग करे, यह राजतंत्र को क्यों कर बर्दाश्त होता। इसलिए उन्हें महल से निष्कासित कर दिया गया था। बल्कि वह खुद ही राजमहल से निकल गए थे। जब विचार ही परस्पर विरोधी हों, तो कोई साथ रह भी कैसे सकता है। वैसे भी उन्होंने इधर की शासन व्यवस्था एवं प्रभुत्व पाने की आकांक्षा आदि पर कभी ध्यान भी नहीं दिया था। जबकि इधर भी सभी अपनी राजनीति चमकाने में लगे थे और स्वाधीनता पूर्व से ही सत्ता में अपनी स्थिति मजबूत कर रहे थे। वैसे वे न तो राजनीति में और न ही गीत–संगीत की दुनिया में ही खास कुछ कर पाए थे और महज एक संगीत शिक्षक भर बनकर ऐसे ही चल बसे थे।

उधर सत्ता से सीधे ताल्लुक रखने वाले लोग विधायक और सांसद भी बनते रहे थे। अब आमदनी न हो, तो महल किस काम का। उस समय त्रिपुरा में काफी अफरा–तफरी मची थी। पूर्वी पाकिस्तान, जो अब बांग्लादेश के नाम से जाना जाता है, से

Scanned by CamScanner

भाग-भागकर हिंदू बंगाली लोग इधर आ-आकर बसते जा रहे थे और कोई भी छोटा-मोटा काम-धाम या व्यापार कर रहे थे। यही नहीं वे स्वयं को स्थानीय समाज में खपाने और अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए वैवाहिक संबंध भी कायम कर रहे थे। ऐसी विकट स्थिति में सभी को कितनी जद्दोजहद करनी पड़ती होगी। चूंकि वे तिरस्कृत, बहिष्कृत और पलायित लोग थे, वे मेहनत नहीं करते, तो क्या करते। वैसे भी उनकी पढ़ाई-लिखाई भी अच्छी होती थी। मगर वे सिर्फ कहने के लिए राजघरानों के लोग थे। उनके पास न शिक्षा थी और न ही समझ।

एक समय ऐसा था जब महल के कारिन्दें सैकड़ों गाँव की मालगुजारी लाते थे। फिर हजारों बीघा खेती की जमीन की उपज थी। सो धन-संपत्ति की कमी न थी। मगर वह सब अचानक बंद हो गया था। जिनको खेती के लिए जमीन दी गई थी, अब वे उस पर अपना कब्जा जमा कर मालिकाना हक ले लिया था। मालगुजारी वसूल करने का काम अब सरकारी अधिकारी करने लगे थे। ऐसे में अर्थाभाव होना स्वाभाविक बात थी।

उसके बाबूजी एकलौते थे। अपनी विकट परिस्थिति के बीच उन्होंने अगरतला के मार्केट में एक किराने की दुकान खोलकर अपने परिवार को सँभाला था। वह अपने दस भाई-बहनों में सबसे छोटा था। और इसलिए वह अपनी माँ के ज्यादा समीप रहा था।

जब वह दसेक साल का रहा होगा, तभी उसकी माँ का देहान्त हो गया था। तब तक उनके पास के काफी जेवरात थे। मगर कुछ घर को सँभालने में, तो कुछ जेवरात दुकान खोलने में बिक चुके थे। फिर भी उनके पास कुछ जेवरात और कीमती कपड़े अभी भी थे, जो उनके मरते ही घर के अन्य सदस्यों द्वारा चुपचाप हथिया लिये गए थे। अब उनके कमरे में बस कुछ टूटे संदूक थे, जिनमें कुछ फटे-पुराने कपड़े और सामान थे, जिनकी कोई कीमत न थी। अब बस संदूक में कुछ उनकी यादें थी, जिसे वह कभी-कभार खोलकर देख लिया करता था। एक दिन वह ऐसे ही एक संदूक को देख-सहेज रहा था कि उसे वह किताब मिली थी। बंगला लिपि में काक-बराक भाषा में लिखी थी वह किताब। उसने उसी दिन उस किताब को पढ़ना शुरु किया, तो उसे रोमांच हो आया। वह उसके आदिम धर्म, ज्योतिष और तंत्र-मंत्र के संबंध में हस्तलिखित किताब थी। इसलिए उसके पल्ले कुछ पड़ा नहीं। उस किताब के रहस्यों और ज्ञान को समझने लायक उम्र भी तो नहीं थी उसकी। फिर भी उसी से उसे महल के एक रहस्य के बारे में पता चला तो वह एक दिन उधर ही महल की ओर चला आया था।

इस समय वह महल खाली था और खंडहर में तब्दील हो चुका था। चारों तरफ वीरानी थी और उसके इर्द-गिर्द झाड़-झंखाड़ फैले हुए थे। सो उधर कौन जाता। लोमड़ियों का एक झुंड उसके देखते इधर-उधर भागने लगे थे। कुछ छोटे-मोटे जीव-जंतु आदि भी दिखे, जिसकी उसे परवाह न थी। उस वक्त तब अगरतला इतना सघन नहीं था। और वह कई बार अकेले ही पहाड़ों और वीहड़ वनों में घूम चुका था। वह किताब में विनिर्दिष्ट दिशा-निर्देशों के अनुरुप महल के समीपवर्ती एक मंदिर के पास के एक सूखे कुएँ के पास पहुँच गया। उसमें घुप्प अंधेरा था। उस दिन तो वह वहाँ से वापस चला आया।

अगले दिन माँ के बक्से को उसने फिर से टटोला, तो उसमें कपड़े का एक बटुआ मिला। उसमें कुछ रुपये थे। कुछ रुपये उसने भाइयों से माँगे। और फिर बाजार जाकर एक टॉर्च खरीद लाया। इसके बाद उसने रस्सी, मोमबत्ती-माचिस, चाकू, डंडा आदि का जुगाड़ किया। और अगले दिन फिर वहीं पहुँच गया।

उसने रस्सियों में अनेक गांठे लगाई। फिर उसे एक पेड़ से बाँध कुएँ में लटका दिया। उसे पूरी उम्मीद थी कि उसमें कोई खजाना होगा, जिसे पाने के बाद उसका जीवन बदल सकता है। धड़कते हृदय के साथ वह अपने पैर के अंगूठे और अंगुलियों को गांठों में फँसाते हुए रस्सी के सहारे धीरे-धीरे कुएँ में उतरने लगा। चूँकि धूप थी, इसलिए इस समय सब स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था।

Scanned by CamScanner

SSMC
SAVITRI SYRGYCARE & MATERNITY CENTER

सावित्री सर्जिकेयर एवं मेटरनिटि सेन्टर

बिग बाजार के पास, सहयोगी नगर - 2, धनबाद

मो0 : 7250633670, 9031810901

डॉ. रीना वर्णवाल

MBBS, MS (Delhi)
Consultant Obs & Gynae
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ

डॉ. बी. के. वर्णवाल

MBBS, MS (Surgery), FIAGES
Consultant General, Laparoscopic
Surgeon & Uro-Surgeon

Specialities

- Laparoscopic Surgery
  (दूरबीन द्वारा पथरी, अपेन्डीक्स, बच्चादानी, हर्निया का ऑपरेशन)
- Cystoscopy, D.J. Stenting, URS & TURP
  (दूरबीन द्वारा पेशाब की समस्या का ऑपरेशन)
- दर्द के बिना Normal Delivery

24 घंटे आकस्मिक सेवा उपलब्ध

Scanned by CamScanner

IITians HUB

Hub of Advanced Coaching

(ONLY IITIAN FACULTIES)

TARGET
JEE MAINS, ADVANCED

XI, XII
CBSE / ICSE / STATE

Free Demo Classes
From 25th March Onwards

Admissions Open

Mr. GAURAV BARANWAL
Director and HOD Physics
B. Tech IIT Dhanbad
Ex. Tata Motor Limited
5yrs Teaching Exp.

FOR MORE DETAILS VISIT OUR CENTER

Center :
IITIAN HUB
1st Floor, Radha Swami Arcade
Saraidhela, Dhanbad
Contact : 8877589749, 7992217886

12/19

Scanned by CamScanner

कुएँ में दलदल और झाड़ियाँ थी। शुक्र था कि वह दलदल भी हल्का ही था, जो सिर्फ पैर में चिपकने लायक मिट्टी के रुप में था। उसने कुएँ के चारों तरफ नजर दौड़ाई तो देखा कि कुएँ के एक दीवार की तरफ लोहे का एक छोटा सा दरवाजा है, जिसमें एक बड़ा सा ताला लगा है। उसने ताले को हाथ लगाकर झटका दिया तो वह खुल गया।

धड़कते हृदय के साथ उसने ताले को अलग कर दरवाजे को खोल दिया। आशा के अनुरुप उसमें एक सूरंग थी। वह सूरंग में घुसा। घुप्प अंधेरे के बीच उसने टॉर्च जलाई तो उसे आगे का रास्ता दिखाई दिया। वह उसमें घुसा और फिर उसमें आगे बढ़ता चला गया। पूरा रास्ता छोटे–बड़े पत्थरों और कीचड़–पानी से भरा था। उसके कपड़े गीले और गंदे हो गए थे। पाँव का चप्पल तो कब का टूटकर उससे अलग हो चुका था और वह नंगे पाँव ही आगे बढ़ रहा था। घंटों चलने के बाद उसे पुनः उसी प्रकार का एक लोहे का दरवाजा दिखाई दिया, जिसमें उसी प्रकार का ताला लटका था। उसने उसे झटके से खींचा तो वह खुल कर उसके हाथ में आ गया।

सूरंग के दूसरे छोर पर छोटे–बड़े पत्थरों से भरा हुआ एक बड़ा सा गड्ढा था। उसने पत्थरों को अपने हाथ से ही हटाना शुरु कर दिया। थोड़ी देर बाद कुछ रास्ता बनाने के बाद वह जब बाहर आया तो उसके सामने हाओरा नदी बह रही थी। उसने अपने साथ लाए सामान को वही एक जगह छिपाकर रख दिया और नदी की तरफ बढ़ चला।

मगर वह एक जगह बदहवास हो नदी के तट पर बेहोश होकर गिर पड़ा था। थकान थी और शायद निराशा भी कि कुछ हाथ लगा नहीं, इसका अहसास भी था। वहीं एक मछुआरा उसे उठाकर अपनी झोपड़ी में ले आया और उसे खाना खिलाकर अपने पास सुला दिया। उन दिनों कुछ भी पूछताछ करने या खोज–खबर रखने का रिवाज भी नहीं था। वैसे भी गरीबों का हिसाब–किताब रखता ही कौन है।

अगले दिन पुनः किसी अज्ञात आशा में वह फिर उस सूरंग में घुसा कि शायद कहीं कुछ दिखे और कुछ मिल जाए। हाँलाकि अब उसे यह भय भी लगने लगा था कि कहीं उस सूरंग में कुछ खतरनाक जीव–जंतू या अज्ञात भूत–प्रेत वगैरा मिल गए, तो क्या होगा। सबसे पहले उसने अपने साथ लाए सामान को ढूँढ़ना शुरु किया। वह उसे एक जगह मिला। मगर माचिस सील गई थी और टॉर्च भी जल नहीं रहा था। बड़ी मुश्किल से ठोंक–बजा कर उसने टॉर्च को जलाने लायक बनाया और पुनः उसी रास्ते पर चल पड़ा।

अब उसे भय यह भी होने लगा कि कहीं टॉर्च की बैटरी न खत्म हो जाए। इसलिए वह बीच–बीच में टॉर्च को जलाते–बुझाता रहा। वैसे भी आँखें अंधेरे में देखने में अभ्यस्त हो जाती है। सूरंग में उसे कुछ तो मिला नहीं। मगर रास्ते में उसे कुछ पुराने सिक्के मिले, जो उसने जेब में भर लिए थे। और जैसे वह रस्सी के सहारे नीचे उतरा था, उसी प्रकार वह उसके बाहर आ गया।

इसके थोड़े दिन बाद ही उसने सूना कि वह महल किसी विशेष काम के लिए सरकार द्वारा उपयोग में किया जाने वाला है और वहाँ सख्त पहरा बैठा दिया गया है।

उसके एक मामा उसके घर के पास वहीं रहते थे और पुरोहित का काम किया करते थे। वे थे तो निर्धन, मगर ज्योतिष और तंत्र–मंत्र में भी विशेष रुचि रखते थे। उसने उन्हें वह किताब और सिक्के दिखाए, तो उनकी आँखे चमक उठीं। वह सिक्के उन दुर्लभ सिक्कों में से थे, जिनसे त्रिपुरा राजघराने के इतिहास के संबंध में नवीन जानकारी मिलनी थी और वह सोने के सिक्कों से भी ज्यादा कीमती थे।

वह उसे साथ लेकर एक स्थानीय विधायक के पास गए। उसने उसे शाबासी दी।

कुछ दिनों बाद उसने सुना कि उन सिक्कों को सरकारी संपत्ति घोषित कर दिया गया है। बाद में उसे पता चला कि उस विधायक ने उन सिक्कों और किताब को अपना बताकर सरकार से काफी बड़ी रकम ऐंठ ली थी। उस विधायक ने उस पर यही कृपा की कि

Scanned by CamScanner

उनकी अनुशंसा पर उसका नामांकन एक सरकारी विद्यालय में हो गया था और वजीफा भी मिलने लगा था। इससे अब उसके घर वाले निश्चिंत थे कि अब उसका जंगलों–पहाड़ों में घूमना–भटकना बंद हो जायेगा और उसे भी लगा कि वह अच्छी तरह पढ़–लिखकर अपनी माँ के सपनों को पूरा कर सकेगा।

उधर उस किताब का पहले बंगला में और बाद में अंग्रेजी में अनुवाद छपा, तो इसकी धूम मच गई थी। बाद में उसने सुना कि वह किताब और सिक्के म्युजियम में सुरक्षित रख दी गई है।

माँ के देहान्त को कुछ ही समय हुए थे कि पिता ने अपनी वृद्धावस्था और लंबे–चौड़े परिवार की परवाह न करते हुए एक बांग्लादेशी कन्या से शादी कर ली थी। और इसी के साथ जैसे सारा कुछ बिखर गया था। सभी भाईयों ने मिलकर उनका बहिष्कार सा कर दिया था और वह बड़ी ही उपेक्षा और तंगहाली में मर गए थे। चूँकि वह पढ़ने में तेज था और उसे विद्यालय से वजीफा मिलता था, वह अपनी पढ़ाई पूरी कर सका था। वैसे उसकी भी अपने दादा के समान संगीत में रुचि थी। मगर उसके भाई इसके सख्त खिलाफ थे और इसलिए वह संगीत की विधिवत शिक्षा नहीं ले पाया था। बाद में उसके भाई ने उसका डिप्लोमा इंजीनियरिंग में दाखिला करा दिया। डिप्लोमा की पढ़ाई पूरी कर वह उदयपुर में गुमती नदी के किनारे स्थित हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर प्लांट में अस्थायी नौकरी में आ गया था। इसके अगले ही साल उसने प्रतियोगिता परीक्षा पास कर दिल्ली में एक अच्छी नौकरी और वेतन पाकर वह वहीं चला गया था। वहीं माधवी से उसकी भेंट हुई थी।

माधवी से उसकी भेंट इत्तफाक से ही हुई थी। दरअसल कुछ लफंगे उसके पीछे पड़ गए थे, जिससे उसने मुक्ति दिलाई थी। वह उसके साहस से प्रभावित हुई थी और उसका फोन नंबर ले लिया था। बाद में परिचय परवान चढ़ा, तो प्रेम में तब्दील हो गया और फिर वह उससे शादी कर वहीं दिल्ली का हो कर रह गया था।

''अरे रात के दो बज रहे हैं और तुम अभी तक जग रहे हो'' माधवी अचानक उठकर बोली – ''अब क्या सोच रहे हो ?''

''नहीं कुछ खास नहीं'' अपने आदत के अनुरुप उसने संक्षिप्त सा जवाब दिया और मुँह घुमाकर लेट गया।

अगले दिन उनका उज्जयंत महल जाने का कार्यक्रम था।

वह महल के, जो अब विधान सभा भवन था, के परिसर के बाहर लॉन के घास पर बैठे थे।

''तुम रात ठीक से सोए नहीं'' माधवी उससे पूछ रही थी – ''मैं देख रही हूं कि तुम यहाँ आकर कुछ ज्यादा ही भावुक हो रहे हो।''

''अपनी जन्मभूमि को देखकर कौन भावुक नहीं होता'' वह बोला – ''वह महल तुम देख रही हो ना, वह हमारे पूर्वजों की निशानी है। मगर उस पर अब हमारा कोई हक नहीं है। यह एक तरह से अच्छा ही है कि उस पर अब जन–सामान्य का हक है। यह मेरे दादाजी का भी सपना था कि त्रिपुरा में लोकतंत्र हो। इसी के लिए वह इसी महल से बेदखल किये गए थे।''

''यह तो अच्छी बात रही कि उन्होंने समय की आवाज सुनी और उसमें अपना सुर मिलाया।''

''मेरे एक दादा जो गीत–संगीत में रुचि रखते थे और फिल्म जगत के जाने–माने व्यक्तित्व भी हुए, उन्हें भी उनके गीत–संगीत के शौक के वजह से इस महल से बेदखल कर दिया गया था और वे फिर बंबई के होकर रह गए थे।''

''जीवन ऐसे ही चलता हैं। मनुष्य ऐसे ही आगे बढ़ता है, और अपने बेहतरी की ओर अग्रसरित होता है।'' माधवी बोली – ''जैसे कि तुम भी अब दिल्ली में प्रवास करने लगे हो, एक बेहतर जीवन जीने लगे हो। इसी की तो सभी की आकांक्षा रहती है न।''

देवजीत आँख मूंदकर लॉन के घास पर लेट गया था। मानो वह अपने पूर्वजों के अतीत को इतिहास को याद कर रहा हो। माधवी उसके बालों में ऊँगलियाँ

Scanned by CamScanner

फिरा रही थी। उधर क्षितिज में सूर्य तेजी से पश्चिम की ओर ढलता जा रहा था।

अचानक देवजीत उठ खड़ा हुआ और बोला ''चलो यहाँ से। मुझे घुटन सी हो रही है।''

वह भी उठ खड़ी हो गई।

''जहाँ तुम पहली नौकरी करते थे मैं वहाँ जाना चाहूँगी। जरा मैं भी तो देखूँ कि वह कैसी जगह है।''

''वह तो उदयपुर में गुमती नदी के किनारे है'' वह हँसकर बोला ''वहाँ जाकर क्या करोगी। कल हम त्रिपुरसुंदरी माता मंदिर जाएंगे। वह भारत का एक महत्वपूर्ण मंदिर है। वहाँ तुम्हें अच्छा लगेगा।''

अगले दिन वह टैक्सी कर उदयपुर स्थित माता मंदिर पहुँच गए थे।

इस समय मंदिर का कपाट बंद था। शायद अंदर विशेष पूजा चल रही थी, जिसके बाद दर्शनार्थियों के लिए मंदिर का दरवाजा खुलता। सो वे मंदिर के पीछे स्थित कल्याण–सागर तालाब की ओर बढ़ गए। तालाब में स्थित बड़ी–बड़ी मछलियों को देख माधवी विस्मित रह गई। कुछ लोग मछलियों के खाने के लिए दाने डाल रहे थे। वे दोनों वहीं तालाब के समीप सीढ़ियों पर बैठ गए।

''शिव–पार्वती की कथा तुमने शायद सुनी होगी। पुराणों में ऐसा वर्णन है कि दक्ष–कन्या सती पार्वती का दाहिना पैर यहाँ गिरा था। और इसलिए यहाँ भी शक्ति पीठ का निर्माण हो गया था। यहाँ अठारह भुजाओं वाली माता दुर्गा का मंदिर है।'' देवजीत बता रहा था – ''कभी उदयपुर ही त्रिपुरा की राजधानी हुआ करती थी। मगर कूकी नागाओं के लूटपाट से परेशान राजा यहाँ से अपनी राजधानी उठाकर अगरतला ले आए। वैसे एक कारण और कहा बताते हैं कि राजा ब्रिटिश सत्ता से नजदीकियाँ चाहता था और इसलिए बंगाल के ठीक बगल में वे अपनी राजधानी ले आये।''

अचानक तालाब के पास हलचल हुई। पता चला कि मंदिर का कपाट खुल गया है। वहाँ बैठे लोग उठ–उठकर मंदिर की ओर बढ़ चले थे। वे भी उठकर मंदिर का रुख कर लिए। मंदिर में दर्शन कर वे बाहर निकल आए।

''चलो एक बड़ा काम हो गया।'' माधवी बोली – ''हमें कई जगह घूमना था। लेकिन घर में ही मिलने–जुलने में बहुत सारा समय निकल गया। कल तुम्हारे घर की 'गरिया पूजा' में शामिल होना है। मैं उस दिन कहीं घर से बाहर नहीं जाऊँगी। अब अगली बार आने पर ही त्रिपुरा के दर्शनीय स्थल देखना संभव हो सकेगा।''

''गरिया पूजा का अनुष्ठान तो सात दिनों तक चलता रहता है। और यह प्रत्येक गाँव में मनाया जाता है। 'गरिया' हमारे यहाँ का यह प्रमुख त्योहार है। इसमें मूलतः देवी गौरी अर्थात् पार्वती की ही पूजा की जाती है। इस अवसर पर किया जाने वाला 'गरिया नृत्य' मूलतः सामूहिक नृत्य है, जिसमें गाँव के सभी

Gram - Gupta
☎ (06274) 222050 (S)
GUPTA TEXTILES
Wholesale Cloth Merchant
Behind Bohra Market
Marwari Bazar, Samastipur - 848 101
(Bihar)
Prop : Indradeo Gupta
3/16

Scanned by CamScanner

युवा भाग लेते हैं। उन्हें गाँव के प्रत्येक घर में जाकर यह नृत्य प्रस्तुत करना होता है। इस अवसर पर गीत गाए जाते हैं और पारंपरिक वाद्य यंत्र ढोल, बांसुरी, सारिंदा आदि बजाए जाते हैं। सारिंदा को तुम आधुनिक वायलिन का पूर्व रुप मान सकती हो। सारिंदा को अन्य जगहों में प्रचलित सारंगी का एक रुप में कह सकते हैं।

''मैंने तुम्हें बताया था ना कि मेरे दादा के एक भाई सारिंदा बजाने में बहुत निपुण थे। संयोगवश वह रवीन्द्रनाथ टैगोर के संपर्क में आ गए थे। अपने इसी सारिंदा की कला साधने के कारण उन्हें त्रिपुरा राजघराने से बहिष्कृत कर दिया गया था। बाद में वह कलकत्ता और फिर मुंबई के फिल्म–नगरी में अपना संगीत देते विख्यात संगीत निर्देशक बन गए। उनके एक बेटे ने भी अच्छा नाम कमाया। वे लोग वहीं मुंबई में बस गए। मेरे दादा ने भी उनका अनुकरण करना चाहा था। मगर वह कलकत्ता और मुंबई का चक्कर काटते रह गए थे, मगर बात बन नहीं पाई।''

''फिल्म–नगरी का चक्कर ऐसा ही है'' माधवी बोली – ''किसी को आसमान पर उठा देता है, तो किसी को पाताल की अतल गहराइयों में फेंक देता है।''

अगरतला के मार्केट में यह देवजीत के साथ घूमते हुए अभिभूत थी। यहाँ के पारंपरिक परिधान और बेंत और बाँस के बने फर्नीचर व अन्य सामग्री को देख वह आश्चर्यचकित थी। वह सोच रही थी कि दिल्ली वापस जाते समय वह इन्हें खरीदकर ट्रेन में बुक करा लेती तो कितना अच्छा रहता। रात में वे एक होटल में भोजन कर वापस घर आ गए थे।

अगले दिन ही ''गरिया'' पूजा थी। सभी इसी की तैयारी में लगे थे। देवजीत की भाभी ने उसे पारंपरिक परिधान और आभूषण पहना दिया था, जिसमें वह बिल्कुल अलग दिख रही थी।

''तुम ध्यान से देखोगी तो ''गरिया'' भी मणिपुरी की तरह का शास्त्रीय नृत्य ही है। इसके स्टेप्स और मुद्राएँ हमें दैनिक कार्य–व्यवहार की अनेक बातें सिखा जाती हैं। धान की बुवाई के लिए पहाड़ के जंगलों को काटकर समतल बना कर उसमें खेती की जाती है, जिसे 'झूम खेती' भी कहते हैं। इस समय अच्छे फसल की आशा में यह त्योहार मनाया जाता है, जिसमें सभी भाग लेते हैं।''

''यह नृत्य संगीत सभी को शोहरत और पैसा कहाँ दिला पाता है।'' वह बोली थी – ''यह तो सिर्फ कुछ भाग्यवानों अथवा पहुँचवालों को ही मिल पाता है।''

''बिलकुल ठीक कह रही हो तुम। तभी तो मेरे पिता और भाइयो को भी इससे अरुचि हो गई थी। मैंने भी गीत–संगीत में हाथ आजमाना चाहा। मगर उन्होंने इससे सख्ती से मना कर दिया। बाद में मैंने डिप्लोमा किया और जब ढंग की एक नौकरी पा ली, तो सभी संतुष्ट हुए। मगर नौकरी का चक्कर ऐसा कि मुझे दिल्ली जाना पड़ गया। मेरे भाइयों ने लगभग जबर्दस्ती वहाँ भेजा, जबकि उस समय अगरतला से दिल्ली जाना कितना कठिन था। तब अगरतला से सैकड़ों मील दूर कुमारघाट तक ही ट्रेन आती थी। वहाँ से छोटी लाइन वाली ट्रेन पकड़ कर पहले गुवाहाटी पहुँचो। फिर वहाँ से दिल्ली की ट्रेन पकड़नी पड़ती थी। उस समय ट्रेन में आरक्षण भी सरलता से नहीं मिलता था। उन दिनों अगरतला से दिल्ली की यात्रा एक सजा थी। मगर अब ट्रेन की बड़ी लाइन बिछ जाने से कितना सुगम हो गया है। अगरतला से दिल्ली जाने के लिए अनेक ट्रेनें हैं, जिनसे यात्रा काफी सुगम हो गई है। अब लगता है कि वाकई हम शेष भारत से जुड़े हैं।''

''माधवी बहु ! सच कहो तो यह परेशानी स्वाधनता मिलने के बाद ही शुरु हुई।'' देवजीत के बड़े भाई अचानक कमरे में प्रकट हो गए थे। वह उनकी बात सुन रहे थे। वह आगे बोले – ''स्वाधीनता पूर्व समय में ऐसा नहीं था। तब अगरतला से बांग्लादेश के चट्टगांव के रास्ते कलकत्ता जाना काफी आसान था। मगर समय, परिस्थिति और राजनीति जो न करा दे, कम ही है। यह अच्छा हुआ कि सुविधा मिली तो तुमलोग यहाँ आ गए। अपनी परंपरा और संस्कृति को जानना–समझना बहुत जरुरी है।''

Scanned by CamScanner

''आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं भैय्या'' वह भावुक होकर बोली – ''इसलिए तो हम यहाँ आपका आशीर्वाद लेने आए हैं। दस दिन कैसे बीत गए, हमें पता भी नहीं चला। कल दिल्ली के लिए हमारी ट्रेन हैं। इसलिए हमें वापस लौटना है। मगर हम आपसे वादा करते हैं कि हम हमेशा यहाँ आते–जाते रहेंगे, ताकि हम अपनी मिट्टी–पानी से, अपनी जड़ों से जुड़े रह सकें।''

''मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई माधवी। हमें तो सिर्फ तुमलोगों की खुशी चाहिए।'' वह बोले – ''और इसलिए तुमने जो बेंत के सामान और फर्नीचर पसंद किये थे, उसे मैंने ट्रेन में बुक कर दिया है।''

उसने आगे बढ़कर उनके चरण स्पर्श कर लिए।

घर के बाहर आँगन में ढोल की तीव्र आवाज आने लगी थी। इसी के साथ बांसुरी, सारिंदा आदि के सुमधुर स्वर भी वातावरण में अपनी मिठास घोल रहे थे। काक–बरक भाषा में युवक गीत गा रहे थे। जबकि युवतियाँ सामूहिक रुप से पारंपरिक नृत्य कर रही थी। घर के बाहर वह देवजीत के साथ निकलकर ''गरिया'' नृत्य देखने में तल्लीन थी।

आज जैसे उसका एक मकसद पूर्ण हुआ था।

चित्तरंजन भारती
क्वा नं. बी 152, एचपीसी टाउनशिप
पो. – पंचग्राम, असम

भारत में प्रथम कब, क्या चालू हुआ

टेलीविजन	–	1959, दिल्ली
मोबाइल	–	1995, कलकत्ता
बिजली	–	1772, दार्जिलिंग
रेलगाड़ी	–	1853, बॉम्बे
टेलिफोन	–	1881, कलकत्ता
रेडियो	–	1927, बॉम्बे
सिनेमा	–	1896, बॉम्बे
कम्प्यूटर	–	1956, बॉम्बे
विमान	–	1932, बॉम्बे
बस	–	1926, बॉम्बे
साइकिल	–	1890, बॉम्बे
समाचार पत्र	–	1780, कलकत्ता
डाक सेवा	–	1837, बॉम्बे
क्रिकेट	–	1793, कलकत्ता
फुटबॉल	–	1802, बॉम्बे

09002726608
08348697971

AJIT KUMAR BURNWAL

NEW ALANKAR JEWELLERS
PUCCA BAZAR, ASANSOL - 1
(OPP. HEAD POST OFFICE)
PHONE : 0341 -2309248

JEWEL GARDEN
88, G. T. ROAD
OPP. BAZAR, KOLKATA, ASANSOL - 1
PHONE - 0341 - 2221494

8/19

A House of Exclusive 22 Carat Halmark Showroom

Scanned by CamScanner

वैवाहिक विज्ञापन के पात्र सम्बन्धी सूचना का अभिभावकगण अपने स्तर से पूरी तरह जांच कर संतुष्ट हो लें – सम्पादक

11/19

वधू चाहिए

मनीष कुमार, DOB 1989, 5'10", B.Tech. BPCL में Asstt. Manager के पद पर कार्यरत हेतु शिक्षित, गोरी एवं सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9973059257

7/19

वधू चाहिए

निवेश कुमार, 26, 5'4'', गोरा, स्मार्ट, पूणे में CAPGEMINI में कार्यरत हेतु शिक्षित, गोरी, सुन्दर, गृहणी/कार्यरत वधू चाहिए। फोटो बायोडाटा के साथ संपर्क करें : पिता निरंजन कुमार गुप्ता, मछुआ टोली, पटना–4, मो. : 7903963751, 8340272548

1/21

वधू चाहिए

Mukesh Burnwal, S/o Jay Prakash Burnwal, 27, 5' 9", fair, Chartered Accountant presently working as Asstt. Manager (Finance) in Eastern Coalfield Ltd. (ECL), of Kajora Bazar, Durgapur (W.B.), Contact No. : 9932363264

8/19

वधू चाहिए

Bikash Kumar, 27, 6', B.Tech. (IIT, BHU) working in City Bank, Gurgaon, Delhi with high seven digits salary, Brother is also B.Tech. (CS, NIT), father Govt. Engr. looking for a suitable good looking fair, well educated working girl (preference). Contact Bipin Lal, Ranchi-10, Mob. : 9835799366, 8603278792

10/19

वधू चाहिए

कुणालदीप, 29, 5' 4'', स्मार्ट, आकर्षक, SBI नागपुर में Deputy Manager हेतु सुन्दर एव सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता श्रवण कुमार बरनवाल, गोल्डेन अलंकार, अम्बिका मार्केट, बड़ा बाजार, देवघर (झारखण्ड), मो. : 9431369172, 9199735007, E-mail : sk30dec@gmail.com

11/19

वधू चाहिए

अभिषेक बरनवाल, 26, 5' 10'', स्नातक, अपना व्यापार हेतु सुयोग्य एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता दिनेश कुमार बरनवाल, मेसर्स माँ दुर्गा ट्रेडर्स हार्डवेयर एण्ड पेन्टस, नवादा, मो. : 9431280263, 9199091766

8/19

वधू चाहिए

सन्तोष कुमार बरनवाल, 29, 5' 7'', गोरा, स्मार्ट, B.Tech (Banglore) M.Tech., राजस्थान सरकार बिजली विभाग में कनिष्ठ अभियंता के पद पर कार्यरत हेतु शिक्षित प्रोफेशनल वधू चाहिए। सरकारी विभाग में कार्यरत को प्राथमिकता। संपर्क करें : ओम प्रकाश बरनवाल (पिता), हीरापुर, धनबाद, मो. : 9234867823

7/19

वधू चाहिए

VIPIN ADHIR, 30, 5' 11'', स्मार्ट, B.Tech, वर्तमान में Sr. Software Engr. Amazon, Bangalore में कार्यरत हेतु सुन्दर, लम्बी (कम से कम 5'4'') प्रोफेशनल वधू चाहिए। Software Engr. को प्राथमिकता। संपर्क करें : सत्यनारायण वर्णवाल, धनबाद, (झारखण्ड), मो. : 9973662744, 8409560401, 9431509455

Scanned by CamScanner

10/19

वधू चाहिए

मनोज कु. बर्णवाल, 30, 5' 10'', गोरा, स्मार्ट, M.C.A., E.Y. बंगलुरु में साफ्टवेयर इंजीनियर,T.L. के पोस्ट पर कार्यरत के लिए सुन्दर, सुशील एवं योग्य वधू चाहिए। कार्यरत को प्राथमिकता दी जायेगी। संपर्क करें : राजेन्द्र प्र. बर्णवाल, दुर्गापुर (WB) मो. : 9232091149, 8436191005

7/19

वधू चाहिए

अमितेन्द्र बर्णवाल, 30, 5'10'', फयेर एवं स्मार्ट, असिस्टेन्ट पेशकार, झारखण्ड कोर्ट में कार्यरत हेतु फेयर, व्यूटीफूल एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता राजेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, मुँगेर। मो. : 9016730875, 9835257981

7/19

वधू चाहिए

सुजीत कुमार, 30, 5' 8'', गुड्स गार्ड उत्तर मध्य रेलवे (इलाहाबाद) हेतु गोरी, सिम्पल, गृहणी, सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करें : कृष्ण कु. बर्णवाल, सुजीत मेडिकल हॉल, खन्दक मोड़, बिहारशरीफ (नालन्दा), मो. : 9835616731, 8651613442

7/19

वधू चाहिए

Sujit Kumar, 32, 5' 9", fair complexion, Smart, Doctor in PMCH, Patna requires preferrable Gov. working bride / professionally qualified suitably matched bride. Contact : Santosh Kumar, Mob. : 6205810646, Rishu Kumar, Mob. :9570567167

10/19

वधू चाहिए

अभिनव कुमार, 30, 5' 9'', Software Engr. working in Banglore हेतु सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता नन्द लाल जी बरनवाल, रजौली (नवादा), मो. : 9905800669, 9379691272, 9080552631

12/19

वधू चाहिए

मणिष कुमार, 28, 5' 5'', स्मार्ट, B.Tech., यूनाईटेड बैंक ऑफ इंडिया, गुजरात में कार्यरत। संपर्क करें : पिता श्री महेन्द्र प्रसाद, गुलजारबाग, पटना। मो. : 9835469300, 9835294151

8/19

वधू चाहिए

अमन प्रकाश, 29, 5' 10'', स्मार्ट, B.E., MBA (Symbiosis) Business Analyst TCS मुम्बई में कार्यरत को वधू चाहिए। प्रोफेशनल को प्राथमिकता। संपर्क करें : अमरनाथ 'छेदी', पटना। मो. : 7323888777, 9852053028

7/19

वधू चाहिए

चन्द्रेश कुमार, 29, 5' 3'', गोरा, स्मार्ट, B.Tech., Software Engr., पूणे में कार्यरत हेतु सुन्दर, शिक्षित वधू चाहिए। कार्यरत को प्राथमिकता। संपर्क करें : पिता डॉ. उमेश प्रसाद, रोसड़ा (बिहार), मो. : 9934843652, 8802217898

9/19

वधू चाहिए

आदर्श बर्णवाल, 28, 5' 11'', स्मार्ट, फेयर, CA (Chartered Accountant ICICI Kokata Branch; Dy. Manager हेतु सुन्दर, सुशील, गोरी, शिक्षित, 5' 4'' लम्बी वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता शम्भू प्रसाद बर्णवाल, राजकमल टेलर्स, रामगढ़ केन्ट (झारखण्ड), मो. : 8051045687, 9835763742

12/19

वधू चाहिए

सौरभ कुमार, 27, 5' 6'', मांगलिक, स्मार्ट, B.E. Software Engr., Nagasso Software Pvt. Ltd., Gurgaon में कार्यरत, सालाना पैकेज 7.5 लाख हेतु शिक्षित सुशील वधू चाहिए। कार्यरत को प्राथमिकता। संपर्क करें : पिता शम्भू प्रसाद, अपोलो फार्मा, K.A. Road, गया मो. : 9386496249, 7050399131

Scanned by CamScanner

8/19

वधू चाहिए

अभिषेक राज, 28, 5'8'', रंग साफ, आकर्षक व्यक्तित्व, B.Tech., पूणे में All States MNC में आकर्षक पैकेज पर कार्यरत, पूणे में अपना 3 BHK फ्लैट हेतु सुन्दर, सुशील एवं प्रोफेशनल वधू चाहिए। पिता जयराज गुप्ता, Retd. SAIL कर्मी, चीरा चास, बोकारो, मो. : 7004528033, 8809920415 एवं 9470569816 पर संपर्क करें।

7/19

वधू चाहिए

मयंक कु. बरनवाल, फेयर, 29, 6', Electl. Engineer, प्रबंधक हुन्डई शोरुम, मेट्रो दिल्ली में हेतु डीग्री होल्डर, प्रोफेशनल, फेयर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता मनोज कुमार बरनवाल, पुराना बाजार, गोमो (धनबाद), मो. : 9308983951, 9934103661, 9523726580 (W.A.)

9/19

वधू चाहिए

अंकेश, 29, 6', गोरा एवं स्मार्ट, B.Tech., भारत सरकार के उपक्रम रेल विकास निगम लि. (RVNL) वर्तमान में पूणे में कार्यरत हेतु प्रोफेशनल वधू चाहिए। संपर्क करें : सत्यनारायण प्रसाद, SAIL बोकारो में कार्यरत। मो. : 9430756921, 9471783531

7/19

वधू चाहिए

Ankur Baranwal, 32, 5' 9", divorced no child working in an IT company as Sr. UI / UX designer in Pune. Completed his post graduation from Symbiosis, well settled in Pune with handsome salary, S/o Rakesh Baranwal, Varanasi, UP, Mob. : 8960227465, 8327671102

7/19

वधू चाहिए

शुभम दीप, 28, 5' 9'', गोरा, स्मार्ट, मेडिकल कं. में सेल्स आफिसर हेतु गोरी, सुन्दर, शिक्षित एवं गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता बिनोद कुमार (बैंक मैनेजर), गिरीडीह, मो. : 9123154895

9/19

वधू चाहिए

पंकज कुमार बर्णवाल, 28, 6' 0'', सम्बलपुर (उड़ीसा) में Indian Oil Corpn. Ltd. में Asstt. Manager के पद पर कार्यरत हेतु कम से कम 5' 4'' और वर्किंग (PSU) को प्राथमिकता, वधू चाहिए। फोटो बायोडाटा के साथ संपर्क करें : भगवान प्रसाद वर्णवाल, धनबाद (झारखण्ड), मो. : 9470366177, 8249583762, 9708509963

9/19

वधू चाहिए

Akash Deep Kamal, 29, 5' 8", fair, smart, B.Com, MBA (Kolkata) distributor, C&F Medicine Ayurved Brother in law CA looking for a suitable match. Contact father Manmohan Lal Gupta, Sliguri, 9434750286, Mr. Shashi Prakash Baranwal, Advocate, Siwan (maternal uncle), 8709981937

9/19

वधू चाहिए

Subhash Kumar, 27, 5' 10", MBA, Asstt. Manager in AXIS Bank, Delhi seeks educated gori & minimum 5' 4", tall girl. Contact : Father Bhola Prasad Baranwal, Patna, Mob. : 9835213780

7/19

वधू चाहिए

Pankaj Kumar, DOB 3 Dec. 1990, 5' 11", Scientific Officer, Bhabha Atomic Research Centre, Govt. of India posted at Kolkata with Annual income of 15 lakh हेतु उच्च शिक्षित, लम्बी, गोरी, सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता अशोक लाल, शाहगंज, महेन्द्रु, पटना–6, मो. : 9852891297, 8697584746

Scanned by CamScanner

7/19

वधू चाहिए

अमरदीप मोदी, श्री गणपत मोदी के पोते, 28, 5' 11'', स्मार्ट, B.Tech., IIT Mumbai, आकर्षक वेतन के साथ गुड़गाँव में एवरेस्ट ग्रुप (U.S.A. आधारित क.) में निदेशक हेतु उच्च शिक्षित लम्बी, गोरी, सुन्दर और कामकाजी वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता अजय कुमार, आईएएस, उपनिदेशक, सीएंडएजी, कोलकाता, मो. : 9431351451

12/19

वधू चाहिए

मनीष कुमार बरनवाल, 28, 5' 10'', गोरा, स्मार्ट, बी.टेक, 5 वर्ष से MNC WELLS FARGO में सीनियर साफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर कार्यरत हेतु प्रोफेशनली क्वालिफाइड, सुन्दर, सुशील एवं लम्बी वधू चाहिए। कार्यरत (IT) को प्राथमिकता। संपर्क करें : पिता दिनेश प्रसाद बरनवाल, आशीष स्टुडियो, अखाड़ा चौक, बिष्णुगढ़ (हजारीबाग), मो. : 9304591353, 9304661853

7/19

वधू चाहिए

रवि कुमार बरनवाल, 30, 5' 9'', स्मार्ट, स्लीम, NIT, M.Tech., रेलवे में JE इंजीनियर के पद पर कार्यरत हेतु संस्कारी, गृहकार्य दक्ष कम से कम 5' 4'' लम्बी वधू चाहिए। फोटो एवं बायोडाटा के साथ संपर्क करे : पिता सोहन लाल बरनवाल, मकतपुर, गिरीडीह (झारखण्ड), W.A. No. : 7360820074, 7549071259

11/19

वधू चाहिए

प्रवेश वरदान, 27, 5'6'', स्मार्ट, गोरा, Min. of Rly. में Clerk के पद पर मुम्बई में कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील, गोरी, शिक्षित-गृहणी, कम से कम 5' 2'' लम्बी वधू चाहिए। सरकारी नौकरी वाले को प्राथमिकता। संपर्क करे : बड़े पापा बिनोद कुमार वर्णवाल, केशोपुर, जमालपुर (मुँगेर), मो. : 9204547417, 6204076564

8/19

वधू चाहिए

रोशन कुमार, 29, 5' 9'', M.Com., B.Ed., स्मार्ट, गोरा, Teacher + अपना Coaching Institute. Income 6 लाख प्रतिवर्ष के लिये शिक्षित, सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता प्रदीप कुमार, चास (बोकारो), मो. : 9031747366, 8651309022

7/19

वधू चाहिए

सुमित कुमार, 30, 5' 8'', गोरा, स्मार्ट, होटल मैनेजर अहमदाबाद में कार्यरत हेतु शिक्षित वधू चाहिए। मांगलिक को प्राथमिकता। फोटो एवं कुण्डली के साथ संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, पो.+जिला : जमुई (बिहार), मो. : 8210158990

8/19

वधू चाहिए

विकास गुप्ता, 27, 5' 4'', स्मार्ट, गोरा, वर्तमान में IDBI बैंक तमिलनाडु में Asstt. Manager के पद पर कार्यरत हेतु सुन्दर, शिक्षित, गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करें : विजय कुमार गुप्ता, ड्रग इन्डिया, D/11 महिमा पैलेस, गोविन्द मित्रा रोड, पटना-4, मो. : 9386061522, 8340123281

7/19

वधू चाहिए

Vikash Kumr, 31, 5' 10", B.Tech. (NIT), MBA (IIM) Calcutta from Asansol posted as Relationship Manager, ICICI in institutional banking in Singapore till Aug. 2019, needs well educated, mature, tall and good looking companion. Please contact Mr. Jaydev Pd. Burnwal, Mob. : 7076950276

7/19

वर चाहिए

26 वर्षीया, 5'3'', गौर वर्ण, स्नातक एवं NIOS से प्रशिक्षण प्राप्त, गृहकार्य दक्ष के लिए योग्य नौकरी पेशा या व्यवसायी वर चाहिए। संपर्क करे : कृष्णा प्रसाद बर्णवाल (पिता), बोधमन तालाब, जमुई। मो. : 8051220458, 7050191051

Scanned by CamScanner

8/19 **वर चाहिए**

अन्नु कुमारी, DOB 18.8.94, 5' 2", South Bihar Power Distribution Co. Ltd. में JE / Jamalpur में कार्यरत हेतु Govt. Job वाले बिहार/ झारखण्ड में कार्यरत को प्राथमिकता। संपर्क करें : पिता सुधांशु प्रसाद, उगवर टोली, रोसड़ा (समस्तीपुर), मो. : 8809496947, 9801180242

12/19 **वर चाहिए**

श्वेता रानी, 23 अगस्त 1992, 5' 4'', गोरी, सुन्दर, सुशील, मांगलिक के लिये वर चाहिए। B.Tech., Software Engr. कलकत्ता में Cognizent Co. में कार्यरत। संपर्क करें : पिता श्याम कुमार बरनवाल, न्यू किराना स्टोर, खन्दकपर, बिहारशरीफ (नालन्दा), मो. : 9835297526, 7488533509

8/19 **वर चाहिए**

अन्नुप्रिया बरनवाल, MBBS, 28, 5' 4", कन्या हेतु M.D. या M.S. वर चाहिए। संपर्क करें : नन्दलाल बरनवाल, झाझा, मो. : 9973902540

9/19 **वर चाहिए**

रितु कुमारी, 25, 5' 3'', सुन्दर, स्मार्ट, अलीगढ़ विश्वविद्यालय में पी.एच.डी. (हिन्दी) में अध्ययनरत, NET, JRF qualified हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : पिता जयप्रकाश, गढ़पर, नवादा (बिहार), मो. : 7654319237, 9334721131

11/19 **वर चाहिए**

तनवी बरनवाल, 5' 2½", 27, B.Tech., भेरी स्मार्ट, गृहकार्य दक्ष, HDFC Life, मुम्बई कारपोरेट ऑफिस में Sr. Software Engr. के पद पर अच्छे वेतनमान पर कार्यरत हेतु सुन्दर, सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : पिता राजीव कुमार, दलसिंगसराय (बिहार), मो. : 9431641924, 9334601356

11/19 **वर चाहिए**

नेहा कुमारी, 28, 5'4'', Fair, Smart, Slim, B.Tech., MBA, working at Corporate Office of Narayana Hrudayalaya Hospital, Banglore looking for a suitable match. Contact Basant Pd. Baranwal (Father), Dhanbad, Mob. : 9934612119, 6203888309

7/19 **वर चाहिए**

शिल्पी कुमारी, 28.1.1992, 5' 4'', फेयर, B.A. (Hons. History), B.Ed. में अध्ययनरत (2017–19 सेशन) हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : दिगम्बर मोदी, मिलन चौक, राजधनवार (गिरिडीह), मो. : 9798325739, 8084731425

9/19 **वर चाहिए**

Alliance invited for Shivangi Kumari, DOB 14.8.1990, fair, beautiful, well educated, M.Com 1st class from DSE (DU) & UGC NET qualified, presently working as Junior Accounts officer at BSNL, Katihar. Looking for a suitable well educated groom preferrably Doctor, Engineer (ONGC, NTPC, NHPC, Rly.) or employed as class 1 or 2 officer in Central Govt. Contact with Bio-data to Shambhunath Shah, Retd. Manager, PNB, Purnia, Mob. : 9810645493, 9650784327, 7667352552

9/19 **वर चाहिए**

Alliance invited for Shivangi Kumari, DOB 14.08.1990, 5' 3", fair, beautiful, well educated M.Com 1st class from DSE (DU) & UGC NET qualified working as Jr. Accounts Officer of BSNL, Katihar. Looking for a suitable well educated groom preferably Dr. Engr. (Govt/PSU), professor in Govt. College or class 1/2 officer in Central Govt. services. Contact with Photo & Bio-data on 9810645493, 9650784329, 7667352552

Scanned by CamScanner

बरनवाल सेवा सदन न्यास, धनबाद

बरनवाल सेवा सदन, धनबाद के निर्माणार्थ सहयोग करें। सहयोग करने वाले का नाम बरन संकल्प में प्रकाशित किया जायेगा।

1. 10000/– या ऊपर का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम।
2. एक लाख रुपये का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम के साथ–साथ हॉल में तैलिय चित्र।
3. दो लाख पचास हजार रुपये का सहयोग देने वालों के नाम पर एक वातानुकूलित कमरा, हॉल में तैलिय चित्र व शीलापट्ट पर नाम।
4. दो लाख पचास हजार रुपये से अधिक का सहयोग देने वाले समाज के भामाशाहों का नाम शीलापट्ट पर वरीयता क्रम से दी जायेगी।

सेवा सदन भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है, समाज के सभी सम्मानित सदस्यों से सहयोग की अपील है। आप हमें सीधे हमारे एकाउंट में भी राशि जमा कर सहयोग कर सकते हैं। हमारा एकाउंट विवरण निम्नवत है–

बरनवाल सेवा सदन न्यास

बैंक : यूको बैंक, हीरापुर ब्रांच

धनबाद

खाता सं. : 01910100935484

IFSC Code : UCBA0000191

इस संदर्भ में आप निम्नवत लोगों से भी संपर्क कर सकते हैं।

पी.एल. बरनवाल — अध्यक्ष — मो. : 9431187661, 7004188137

बालेश्वर प्रसाद — सचिव — मो. : 9431725382, 7717762093

Scanned by CamScanner

स्वर्ग का सुख

अभयारण्य में चंपा नाम की एक बंदरिया रहा करती थी। उसे बच्चों से बड़ा प्यार था, पर दुःख की बात थी उसके अपना कोई बच्चा न था इस बात से रात-दिन खिन्न रहा करती थी। तब उसके पति ने उसे समझाया 'देखो चंपा, यों मन ही मन घुलने से कोई फायदा नहीं, उल्टे तुम्हारा स्वास्थ्य और नष्ट हो जाएगा। तुम औरों के बच्चों को प्यार किया करो, उनकी सेवा किया करो ! हो सकता है भगवान प्रसन्न होकर तुम्हें भी बच्चा दे दें।

चंपा को पति की बात अच्छी लगी। अब वह दूसरी बंदरिया के बच्चों की सेवा सहायता करने लगी। वह उन्हें तरह-तरह के खेल खिलाती, अच्छी बातें सिखाती और खाने की चीजें देती। जल्दी ही पास-पड़ोस के सारे बच्चे उससे खूब घुल-मिल गए। वे 'मौसीजी-मौसीजी' कहकर उसके आगे-पीछे घूमते रहते।

संयोग की बात कि एक वर्ष बाद चंपा के अपना एक बच्चा भी हो गया, वह बड़ी प्रसन्न हुई। 'मैं बेटे को गुणवान बनाऊँगी, परिश्रमी बनाऊँगी, बहुत अच्छा बनाऊँगी' उसके जन्म के समय चंपा ने मन ही मन सोचा। चंपा ने अपने बच्चे का बड़े ध्यान से लालन-पालन किया। वह उसकी हर सुख-सुविधा का ध्यान रखती। कुछ बड़े होने पर चंपा ने उसे शिक्षा देना भी प्रारंभ कर दिया। कुछ ही वर्षो में उसका बेटा किशू बड़ा ही गुणवान और ज्ञानवान बन गया। जो उसे देखता उससे बाते करता, उसके साथ रहता, उसका जी प्रसन्न हो जाता। वह बड़ा ही विनम्र-मीठा बोलने वाला, दूसरों की सहायता करने वाला और समी का सम्मान करने वाला था, यही वे गुण हैं जिनके कारण दूसरे हमें आदर और स्नेह दिया करते हैं।

किशू जब युवा हुआ तो अनेक बंदर यह चाहने लगे कि उनकी बेटी का विवाह उससे हो जाए। वे उसके गुणी स्वभाव से परिचित थे और अच्छी तरह समझते थे कि उनकी बेटी को यह सदैव सुखी रखेगा। धन-संपत्ति तो नष्ट हो सकती है, पर गुणों की संपत्ति कभी नष्ट नहीं हुआ करती।

किशू का विवाह काली नाम की एक बंदरिया के साथ हो गया। किशू जितना गुणी था, विनम्र था काली उतनी ही झगड़ालू और क्लेश करने वाली। वह छोटी-छोटी बात पर लड़ाई करती। किशू की बूढ़ी माता उसे फूटी आँखों भी न सुहाती। बात-बात में किशू से वह उनकी बुराई किया करती। इस बात पर जब किशू उसे डाँटता तो वह फफक-फफक कर रोने लगती। ऐसे जीवन से किशू बड़ा ही दुःखी हो गया। कहाँ नरक में आ फँसा हूँ' मन ही मन वह सोचा करता। अब उसकी समझ में यह बात अच्छी तरह से आ गई कि बुजुर्ग क्यों इस बात को कहा करते हैं कि गृहिणी से ही घर बनता है अतएव वधू के चुनाव में गुणों को प्रमुख स्थान देना चाहिए।

हम जैसे व्यक्ति के साथ रहते हैं उसके आचार-व्यवहार का, गुणों का, स्वभाव का सूक्ष्म प्रभाव निःसंदेह हम पर पड़ता है। किशू भी अनजाने में धीरे-धीरे काली से प्रभावित हो रहा था। काली के भड़काने से एक दिन वह अपनी माँ से लड़ पड़ा। काली तो पूरी महाकाली थी। उसने किशू को माँ के विरुद्ध और भरा। उसी रात वे दोनों चंपा को अकेली छोड़कर वहाँ से चल पड़े। रात भर और दिनभर वे चलते रहे, और दूर तक जंगल में जाकर उन्होंने डेरा डाला।

वहाँ किशू और काली ने अपनी सुख-सुविधा की सारी सामग्री जुटा ली। किशू को जब काली के साथ अकेले रहने का अवसर मिला तब वह समझा कि उसका स्वभाव कितना उग्र है।

'ओह' माँ की नहीं सारी गलती इसी की है, यह बात भी उसकी समझ में अच्छी तरह आ गई।

किशू जब-तब बैठकर अपनी माँ को याद करता। जब भी वह उसके विषय में सोचता उसका दिल भर आता। बचपन से लेकर बड़े होने तक की सारी घटनाएँ एक-एक करके उसकी आँखों के आगे घूम जाती। माँ का

Scanned by CamScanner

स्नेह, उसका त्याग सभी कुछ उसे याद आने लगते, 'ओह, ऐसी ममतामयी माँ को अकारण छोड़कर मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है। बुढ़ापे में तो मुझे उनकी सेवा करनी चाहिए थी, न कि यों उन्हें छोड़ देना चाहिए। वह मन ही मन सोचता और अपने आपको धिक्कारता। किशू ने अनेकों बार काली से माँ के पास लौट चलने का आग्रह किया पर वह किसी भी प्रकार तैयार न हुई।

कुछ समय बाद काली के एक बच्चा भी हो गया। किशू ने बच्चे के प्रति अपने मन में उमड़ती भावनाओं से यह अनुभव कर लिया कि माता–पिता बच्चों को कितना प्यार करते हैं। मेरी माँ ने मुझसे भी न जाने कितनी आशाएँ की होंगी, वह मन ही मन सोचा करता।

एक दिन बहुत बड़ी दुर्घटना घट गई। किशू और काली पास–पास बैठे थे। उनके बीच में बच्चा लेटा हुआ था। तभी अचनक पीछे से एक भेड़िया आया और दबे पैरों आकर बच्चे को ले भागा। किशू और काली ने जब मुड़कर देखा तो भेड़िया भागकर दूर जा चुका था। वे हा–हाकार करते हुए उसके पीछे दौड़े, भेड़िया और भी तेज भागा और कुछ ही देर में उड़नछू हो गया। किशू और काली दोनों बहुत दूर तक भागे परंतु उनके हाथ कुछ न लगा। काली तो बच्चे के शोक में बावली–सी हो गई। वह छाती पीट–पीट कर करुण क्रंदन कर रही थी–हाय मेरे बेटे, हाय मेरे लाल। किशू बड़ी कठिनाई से उसे समझा कर वापिस लाया।

अब काली का खाना–पीना सभी छूट गया। वह चौबीसों घंटे बैठी अपने बच्चे को याद करती रहती थी। अपने बेटे को खोकर किसी माँ को कैसा लगता है – यह अब उसे अच्छी तरह अनुभव हो गया था। वह किशू से कहती – 'मैंने तुम्हारी माँ से अलग किया है न। भगवान ने उसी का दंड तो मुझे दिया है।'

उधर अब चंपा का हाल भी सुनिए। सुबह उठकर जब उसने बेटे–बहू को पेड़ पर नहीं पाया तो वह सोचने लगी कि प्रातः घूमने चले गए होंगे, घूम–फिरकर नाश्ता करके थोड़ी देर में लौट आएँगे। वह भूखी प्यासी बैठी उनकी प्रतीक्षा करती रही, पर रात तक भी जब बहू–बेटे नहीं लौटे तो वह बड़ी चिंतित हुई। बेचारी अपने अशक्त शरीर से खाँसती–लड़खड़ाती आस–पास की सारी जगह देख आई, पर किशू और काली वहाँ होते तो मिलते।

दूसरे दिन चंपा फिर प्रातः से ही अपने अभियान पर निकली। वह जंगल का चप्पा–चप्पा छान आई पर बहू–बेटे का कहीं पता न लगा। हाँ, भाऊजी उल्लू ने यह जरुर बताया कि उसके बहू–बेटे को इस जंगल की सीमा से पारकर आगे बढ़ते देखा था।

भाऊजी की बात सुनकर चंपा का हृदय रो उठा। वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी। 'हाँ बेटा, कौन–सा अपराध किया था मैंने जो तुम मुझे छोड़कर चले गए वह हड़बड़ाई ओर फिर अचेत हो गई। पास से गुजरने वाली कांता हथिनी ने उसके मुँह पर पानी के छींटे लगाए, जैसे–तैसे उसे होश आया। दुःख को अपने हृदय में छिपाए थके–हारे कदमों से जैसे–तैसे वह घर की ओर लौटी।

चंपा अब समझ गई कि उसका बेटा जान–बूझकर उसे छोड़ कर गया है। उसकी निष्ठुरता ने चंपा के हृदय पर गहरा आघात पहुँचाया था। सारा संसार उसे नीरस जान पड़ा। किसी काम में उसका मन न लगता था। घर तो मानो उसे काटने को दौड़ता था। वह सुबह होते ही घर से निकल पड़ती और यों ही सारे जंगल में इधर–उधर घूमती–भटकती। रात होने पर ही घर लौटती और चुपचाप सो जाती।

एक दिन चंपा यों ही घूमती हुई बहुत दूर भेड़िये की माँद के पास निकल गई, वहाँ उसने अद्भुत दृश्य देखा और चौंक उठी। भेड़िए के बच्चों के पास बंदर का भी एक बच्चा बैठा था। चंपा ने आँखें फाड़–फाड़कर देखा। हाँ वह बंदर का ही बच्चा था। यह तो हमारी जाति का बच्चा है। यह तो हमारी जाति का बच्चा है। भेड़िया कहीं इसे खा न जाए, वह बुदबुदाई।' मुझे इस नन्हें बच्चे की रक्षा करनी ही चाहिए' वह मन ही मन बोली। फिर वह अपनी जान को जोखिम में डालकर चुपके से बंदर का बच्चा उठा लाई और पेड़ पर चढ़ गयी। भेड़िए ने देखा तो वह आग बबूला हो उठा। उसने चंपा को बहुत धमकाया, बहुत लालच दिया पर वह बच्चा वापिस करने के लिए टस से मस न हुई। हारकर भेड़िया को ही वापिस

Scanned by CamScanner

जाना पड़ा।

भेड़िए के चले जाने पर चंपा भी एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग लगाती हुई जंगल पार करने लगी। उसे डर था कि भेड़िया कहीं पास ही न छिपा हो और कहीं फिर आकर बच्चा न झपट ले, इसलिए वह ऐसा कर रही थी।

पेड़–पेड़ पर से जाने के कारण चंपा रास्ता भटक गई और दूसरे जंगल में जा पहुँची। चलते–चलते जब वह थक गई और साँझ का झुटपुटा भी हो गया तो वह बच्चे को लेकर एक पेड़ पर बैठ गई। उस पेड़ की एक ऊँची डाली पर किशू और काली बैठे हुए थे। चंपा ने उन्हें नहीं देखा था। चंपा ने आराम से बैठने पर बच्चा अपनी छाती से अलग करके डाल पर बैठाया। बच्चे को जोरों की भूख लगी थी, वह चिचिआने लगा। आवाज सुनकर काली की निगाह सहसा नीचे गई। 'मेरा बच्चा–मेरा नन्हा' कहकर वह तेजी से कूद पड़ी और बच्चे को कसकर छाती से लगा लिया। अब तक किशू का ध्यान भी बट चुका था। उसने माँ को नीचे बैठे देखा तो वह भी ''अम्मा–अम्मा' कहकर उससे लिपट गया। किशू, काली और चंपा तीनों की आँखों से आँसू बह रहे थे। उन्होंने एक दूसरे को अपनी–अपनी बात सुनाई।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही चंपा घर जाने को तैयार हो गई, जब वह चलने लगी तो किशू ने उसका रास्ता रोक लिया और कहने लगा – 'अकेली कहाँ जाओगी अम्मा, हम भी तो तुम्हारे साथ ही चलेंगे।'

काली चंपा के पैरों पर गिर पड़ी और कहने लगी – 'माँ जी, मुझे क्षमा कर दीजिए। मैंने बुरे विचारों से परिवार के टुकड़े कर दिए। मिल–जुलकर रहने के, बड़ों की सेवा करने के महत्व को मैं तब नहीं समझती थी, पर अब मुझे यह समझ आ गई कि माँ बच्चे के लिए कितना त्याग करती है, कितना कष्ट सहती है और उससे कितनी आशायें रखती है। बच्चे का भी कर्त्तव्य हो जाता है कि वह बड़ा होकर माता–पिता की सेवा करे। जो ऐसा नहीं करता उल्टे अपने माता–पिता से बुरा बोलता है, व्यवहार करता है उसे धिक्कार है।'

'हाँ माँ, स्नेह और त्याग से भरा परिवार ही स्वर्ग का सुख देता है, किशू भी गंभीर होते हुए बोला।

चंपा ने काली को उठाकर अपने हृदय से लगा लिया। प्रसन्नता से उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। भगवान तुम्हारे विचार ऐसे ही बनाए रखे काली और किशू के सिर पर हाथ फिराती हुई यह बोली।

इसके बाद चंपा, किशू, काली और नन्हा सभी अपने पुराने घर की ओर लौट चले। उसके हृदय में मिल–जुलकर रहने, प्यार और सहकार भरा स्वर्गीय परिवार बसाने की भावनाएँ हिलोरें ले रही थीं।

''रुपये का इतिहास''

❖ फूटी कौड़ी से कौड़ी
❖ कौड़ी से दमड़ी
❖ दमड़ी से धेला
❖ धेड़ा से पाई
❖ पाई से पैसा
❖ पैसा से आना
❖ आना से रुपया बना

(256 दमड़ी = 192 पाई = 128 धेला = 64 पैसा (Old) = 16 आना = 1 रुपया।)

1) 3 फूटी कौड़ी = 1 कौड़ी
2) 10 कौड़ी = 1 दमड़ी
3) 2 दमड़ी = 1 धेला
4) 1.5 पाई = 1 धेला
5) 3 पाई = 1 पैसा (पुराना)
6) 4 पैसा = 1 आना
7) 16 आना = 1 रुपया

❖ Our children & grand children must know the old history of small coins. Our one rupee was consisting of 256 parts calls 'DAMRI'

प्राचीन मुद्रा की इन्हीं ईकाइयों ने हमारी बोल–चाल की भाषा को कई कहावतें दी हैं, जो पहले की तरह अब भी प्रचलित है – 1) एक फूटी कौड़ी भी नहीं दूंगा 2) धेले का काम नहीं करती हमारी बहु 3) चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए 4) पाई–पाई का हिसाब रखना 5) सोलह आने सच इत्यादि।

Scanned by CamScanner

बेनीलाल बरनवाल सेवा सदन बासुकिनाथ का उद्घाटन 14.7.19

लम्बे प्रतीक्षा के बाद नवनिर्मित बरनवाल सेवा सदन, बासुकिनाथ में 14 जुलाई 2019 को उद्घाटन सम्पन्न हो गया। उद्घाटन स्थानीय जरमुन्डी के विधायक श्री बादल पात्र सेख जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि बरनवाल समाज हमारा परिवार है हमारा अंग है और हमारे क्षेत्र में यहाँ के भक्तो के सेवा के लिए बासुकिनाथ में सेवा सदन बना है। मैं बेनीलाल बरनवाल सेवा सदन के विकास में हर प्रकार से सहायता करूँगा जब भी मेरी जरूरत होगी हमेशा सहयोग में आगे रहूँगा।

बेनीलाल बरनवाल सेवा सदन का उद्घाटन स्व. बेनीलाल एवं उनकी पत्नी के चित्र पर माल्यार्पण करके किया गया। इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि श्री भारतवर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा के संरक्षक श्री शिवकुमार बरनवाल, विशिष्ट अतिथि अधिवक्ता श्री पी.एल. बरनवाल, सदानन्द प्रसाद बरनवाल, देवनन्दन प्रसद बरनवाल एवं पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शारदा प्रसाद बरनवाल, पूर्व राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती ललिता लाल बरनवाल (कलकत्ता) मंचासीन थे एवं अपने-अपने सम्बोधन में बेनीलाल सेवा सदन के उत्तरोत्तर विकास में हर संभव सहयोग देने का संकल्प लिये। स्वागत भाषण करते हुए देवघर के श्री सीताराम बरनवाल ने देशभर से आये सभी प्रमुख बरनवाल बन्धुओं का स्वागत किये एवं इन्होंने सैकड़ों की संख्या में पहुँचे सभी बरनवाल बन्धुओं, माताओं, बहनों को अपने सम्बोधन में बताये कि वर्षो पूर्व महासभा ने हम चार लोगों को बेनीलाल बरनवाल सेवा सदन की जर्जर स्थिति का अवलोकन करने उसकी रिपोर्ट तैयार करने एवं नापी आदि करने का दायित्व सौंपा गया था जिसमें राँची के डा. विजय प्रकाश, रानीगंज के डा. दशरथ प्रसाद बरनवाल, डोमचांच से श्री अजय कृष्ण और मैं (सीताराम बरनवाल) तत्कालीन ग्रामीण बैंक मैनेजर गत 2 मार्च 2000 को बासुकिनाथ जाकर स्थिति का अवलोकन किये थे। बासुकिनाथ में बैठक किये थे इसके दोनों बगल के लोगो ने लगभग 300 फीट जमीन कब्जा कर निर्माण कर लिये थे। यादव धर्मशाला बगल में बन गया था यहाँ लोगों ने बताया था कि जल्द से जल्द सेवा सदन बनायी जाय नहीं तो यह जमीन हाथ से निकल सकती है। स्व. बेनीलाल बरनवाल के सुपुत्र श्री शिवनारायण लाल बरनवाल के निरन्तर प्रेरणा से एवं महासभा के लिये गये कार्यकारिणी समिति के निर्णयानुसार बरनवाल सेवा सदन देवघर के वर्तमान संचालन करने निर्माण कार्य करवाने का भार प्रो. रन्जित कुमार बरनाल को सौंपी गई जो अपने अथक प्रयास से अपने दिये गये समयानुसार 14 जुलाई 2019 को दो मंजिला धर्मशाला बन गया जो इसी सावन माह से यात्रियों के लिये सेवा हेतु उपलब्ध है। डा. रन्जित कुमार धन्यवाद के पात्र हैं। इस अवसर पर सभी बरनवाल बन्धुओं ने अपने-अपने परिचय दिये एवं बेनीलाल बरनवाल धर्मशाला के रख-रखाव एवं आगे के विस्तार हेतु श्रमदान माह में 5 दिन देने वालों में राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग महासभा झारखण्ड अध्यक्ष श्री अजय कृष्ण के अलावे दो बरनवाल बन्धुओं ने अपना नाम लिखवाये।

इस पुनीत अवसर पर विचार-व्यक्त करने वालों में मंचासीन पदाधिकारियों के अलावे बरन संकल्प के सम्पादक बालेश्वर प्रसाद, कलकत्ता महासभा के नगर अध्यक्ष रामदेव बरनवाल, बटिया से ओंकार बरनवाल, श्रीमती पुनम बरनवाल, सीटी मैनेजर अरविन्द कुमार, झुमरी तिलैया, डा. विजय प्रकाश राष्ट्रीय मंत्री, अजय कृष्ण, प्रो. अनिल कुमार बरनवाल, दलसिंहसराय, प्रदीप कुमार बरनवाल पटना के अलावे अनेक लोगों ने सारगर्मित वचनों से अवगत कराये। संचालन सुधांशु

Scanned by CamScanner

बरनवाल ने किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने वालों में सर्वश्री राजकुमार बरनवाल, उमाशंकर बरनवाल, दीनबन्धु बरनवाल, रोहित बरनवाल, आदित्य बरनवाल, जयशंकर बरनवाल, डा. राहुल कुमार, ब्रजेश कुमार, राजेश कुमार, राजन शशि, कृष्णदेव मोदी (पूर्व मुखिया), गणेश प्रसाद बरनवाल, सत्यनारायण लाल, संजय कुमार, ओमप्रकाश बरनवाल, रुपा बरनवाल, विभा बरनवाल, रामचन्द्र प्रसाद बरनवाल, मोहन प्रसाद बरनवाल के अलावे सैकड़ों लोग कार्यक्रम के साक्षी बने। कार्यक्रम समाप्ति के उपरान्त ओ.बी.सी. समिति की बैठक हुई जिसके संयोजक डा. विजय प्रकाश बरनवाल बनाये गये। इनके अलावे समिति में सर्वश्री डा. विजय कुमार, साहेबगंज, श्री पी.एल. बरनवाल, धनबाद, सीताराम बरनवाल देवघर, अजय कृष्ण डोमचांच तथा रांची से कुछ व्यक्ति शामिल किये गये। सदानन्द प्रसाद बरनवाल का सहयोग लेने की बात दुहराई गई। ओ.बी.सी. समिति की अगली बैठक राँची में होगी जिससे कार्य प्रगति हो सके। प्रो. रन्जित कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन की गई और कार्यक्रम समाप्त हुई।

डा. विजय प्रकाश

शायद कुछ ही लोग जानते है इनका अंग्रेजी नाम

- ❖ समोसा – Rissole
- ❖ पकौड़े – Fnitters
- ❖ जलेबी – Funnel Cake
- ❖ पानीपुरी – Water Balls
- ❖ नमकीन – Crisp Salty
- ❖ कचौड़ी – Pie
- ❖ रायता – Mixed Curd
- ❖ पकवान – Dressed food
- ❖ मटठा – Whey
- ❖ टिक्की – Cake
- ❖ घी – Clarified Butter

बरनवाल सेवा समिति, नवादा

बरनवाल सेवा समिति नवादा के नवनियुक्त अध्यक्ष मनोज कुमार ने 30 जून दिन रविवार देर रात को एक बैठक स्थानीय बरनवाल सेवा सदन नवादा में कर के कार्यकारिणी समिति का गठन की प्रक्रिया को अन्तिम रुप दिया जो इस प्रकार है –

अध्यक्ष – मनोज कुमार, उपाध्यक्ष – संजय कुमार एवं सुनील जी ज्वेलर्स, सचिव – रविकान्त जी धागा, सह–सचिव – भोला प्रसाद विद्युत एवं अरुण कुमार होजियरी, कोषाध्यक्ष – सुजीत जी ज्वेलर्स, प्रचार प्रसार मंत्री – विवेकचन्द्र धीर, संगठन मंत्री – अमरेन्द्र कुमार, भंडार मंत्री – जयराम प्रसाद, अंकेक्षक – ठाकुर लाल बैंकर, सांस्कृतिक मंत्री – रितेश कुमार झन्नु। इसके अलावा कार्यकारिणी सदस्यों के नाम – मनोज कुमार मोदी, सुबोध जी बिस्कुट, दिनेश कुमार दीनु, प्रमोद कुमार बबलु, उमेश ज्वेलर्स, मदन जी लकड़ी, जय प्रकाश गोल्डी, सुबोध जी स्टुडियो, कुमार गौरव, मनीष कुमार दवा, सत्येन्द्र जी कपड़ा, सुजीत जी दवा, विजय जी, सतीश जी मशीन, नरेश प्रसाद प्रहलाद ज्वेलर्स, टिन्कु जी गैस, संतोष जी मेडिकल, अजय रेडियो, पवन कुमार अधिवक्ता, श्रवण कुमार (हाट पर), मुन्ना जी नारियल एवं विशेष आमंत्रित सदस्य के नाम कुमार गौरव, शैलेश कुमार, दिनेश चन्द्र कुमार व अन्य को बनाया गया है। कार्यक्रम की शुरुआत अहिवरन जी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मनोज कुमार ने किया। इस कार्यक्रम में हमारे संरक्षक ब्रदीनारायण गुप्त उपस्थित थे।

धन्यवाद

अरुण कुमार होजियरी
सह–सचिव
बरनवाल सेवा समिति, नवादा

Scanned by CamScanner

हेल्दी रेसिपी

कोकोनट मिल्क एग बिरयानी

सामग्री – चावज 2 कप, उबला अंडा 6, तेजपत्ता 1, इलायची 2, लौंग 2, बीस से कटी मिर्च 1, साबुत काली मिर्च 1/4 चम्मच, बारीक कटा प्याज 2, कटा टमाटर 3, बारीक कटा लहसुन 6 कलियां, हल्दी पाउडर 1/2 चम्मच, लाल मिर्च पाउडर 1/2 चम्मच, जीरा पाउडर 1/2 चम्मच, धनिया पाउडर 1/2 चम्मच, गरम मसाला पाउडर 1 चम्मच, कोकोनट मिल्क 2 कप, पानी 1 1/2 कप, नमक स्वादानुसार।

विधि – प्रेशर कुकर में मध्यम आंच पर घी गर्म करें। सभी साबुत मसाले जैसे इलायची, लौंग, तेजपत्ता और साबुत काली मिर्च डालें और उन्हें कुछ सेकेंड पकने दें। अब कुकर में प्याज, अदरक और लहसुन डालें। प्याज को सुनहरा होने तक मध्यम आंच पर पकाएं। हल्दी पाउडर और लाल मिर्च पाउडर डालें। एक से दो मिनट तक और पकाएं। अब टमाटर और हरी मिर्च को कुकर में डालें। टमाटर के मुलायम होने तक पकाएं। जीरा पाउडर, धनिया पाउडर और नमक को कुकर में डालकर मिलाएं। तेल छोड़ने तक मसालों को पकाएं। अब गरम मसाला और कोकोनट मिल्क डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। उबले हुए अंडों का छिलका छीले और उन्हें कुकर में डालें। धीमी आंच पर लगभग 15 मिनट तक ग्रेवी को पकाएं। सबसे अंत में पानी से अच्छी तरह से धोया हुआ चावल कुकर में डालकर मिलाएं। डेढ़ कप पानी कुकर में डालें। नमक व मसालों को स्वादानुसार एकजस्ट करें। तीन सीटटी लगने के बाद गैस बंद कर दें और कुकर का प्रेशर अपने आप निकलने दें। प्याज के रायते के साथ इस स्वादिष्ट बिरयानी को पेश करें।

पुदीना मशरूम सोया बिरयानी

सामग्री – बासमती चावल 1 1/2 कप, कटा हुआ बटन मशरुम 1 कप, सोयाबीन 1 कप, बारीक कटा प्याज 1 कप, बारीक कटा अदरक 1 टुकड़ा, दही 1/2 कप, बिरयानी मसाला 2 चम्मच, लहसुन 3 कलियां, हल्दी पाउडर 1 चम्मच, गरम मसाला पाउडर 1 चम्मच, लाल मिर्च पाउडर 2 चम्मच, बारीक कटी पुदीना पत्ती 1/4 कप, नमक स्वादानुसार, घी 2 चम्मच, बारीक कटी मिर्च 1, शाही जीरा 1 चम्मच, तेजपत्ता 1, चक्र फूल 1, इलायची 1, लौंग 2, दालचीनी 1 टुकड़ा।

विधि – बासमती चावल को धो लें और 20 से 30 मिनट के लिए पानी में भिगोएं। इस पानी में दालचीनी, पुदीना के कुछ पत्ते, दो–तीन लौंग, इलायची और एक तेजपत्ता भी डालें। एक बाउल में सोयाबीन डालें और आवश्यकतानुसार गर्म पानी डालें और कुछ देर छोड़ दें। प्रेशर कुकर में घी गर्म करें और उसमें जीरा, तेजपत्ता, चक्र फूल, दालचीनी, लौंग और इलायची डालें। जब ये साबुत मसाले पकने लगे तो कुकर में अदरक, लहसुन और हरी मिर्च डालकर दो से तीन मिनट तक भूनें। अब कुकर में मशरुम, बिरयानी मसाला, हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, गरम मसाला पाउडर और नमक डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। जब मसाले तेल छोड़ने लगे तो कुकर में घी, पानी, निचोड़ा हुआ सोयाबीन, पुदीना, पानी से निकाला हुआ चावल और दो कप पानी डालकर मिलाएं। कुकर बंद करें और दो सीटी लगाएं। कुकर का प्रेशर अपने–आप निकलने दें। बूंदी रायता के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

– संकलित

Scanned by CamScanner

With best compliments from

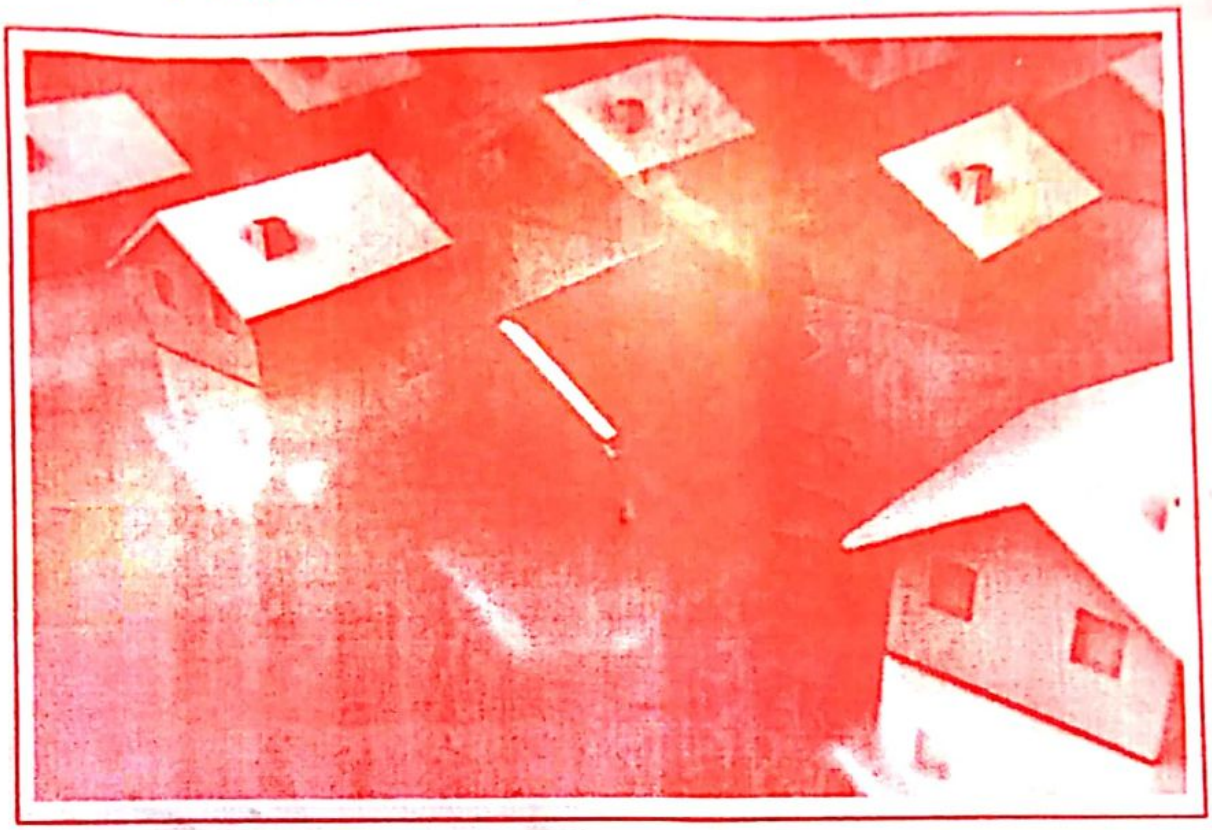

You fantasize we materializse...

Deepak Baranwal **Praveen Barnwal**

Golden Estate

Property Consultant & Finance Advisor

Flat No. 146. Pocket-1, Sector-19, Dwarka, New Delhi-110075
Tel: 011-28041188, 2804199 Mob.: 9810108174, 9810008139
Email: goldenpropmart@gmail.com

12/19

Scanned by CamScanner